माँ तुम्हें प्रणाम

विधु भूषण 'विधुजी'

माँ तुम्हें प्रणाम

प्रकाशक :

सेतु प्रकाशन

9, माधव पार्क विभाग - 2, माधव इन्टरनेशनल स्कूल के पास,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद - 382418

विधु भूषण "विधुजी"

जन्म	:	11 सितम्बर 1954 को कानपुर, उ.प्र. (उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव ग्राम शुक्लाखेड़ा के मूल निवासी)
पिता	:	स्व. श्री शारदा चरण त्रिवेदी
मांता	:	स्व. सरला देवी त्रिवेदी
शिक्षा	:	एम.ए. (हिन्दी), बी. कॉम. और एल.एल.बी.
लेखन विधाएँ	:	कविता एवं स्वतंत्र लेखन
सम्प्रति	:	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, मुंबई से सेवानिवृत्त, कानूनी सलाहकार
प्रकाशन	:	मृगतृष्णा, हृदयांगन, 'माँ की ममता' (कविता संग्रह)
सम्मान	:	1. देश की सुप्रसिद्ध साहित्य संस्थाओं में निरंतर सहभागिता 2. प्रेमांजलि साहित्य संस्था में मानद अध्यक्ष, ठाणे-मुम्बई 3. फास्ट न्यूज चैनल द्वारा "गौरव पुरस्कार" 4. युवा उत्कर्ष साहित्य मंच (पंजीकृत न्यास) नई दिल्ली द्वारा "काव्य गौरव सम्मान 2018" और "सारस्वत सम्मान 2017" 5. श्रीमद् भागवत सत्संग समिति नवी मुम्बई के सौजन्य से "काव्य शरोमणि" से अलंकृत 6. हिन्दी भाषी एकता परिषद (रजि.) ठाणे द्वारा सम्मान चिन्ह अलंकरण 7. कौन्डिन्य साहित्य सेवा संस्थान, कादीपुर सुल्तानपुर द्वारा 'महादेवी वर्मा सम्मान' 8. साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा, राजस्थान से सम्मानित "हिन्दी काव्य भूषण की मानद उपाधि"
संपर्क	:	विधु भूषण त्रिवेदी श्री सत्य शंकर रेसीडेंसी (नीलकंठ ग्रीन्स के पास), मानपाड़ा, ठाणे (पश्चिम) पिन-400610 (महाराष्ट्र)
दूरभाष	:	09769988622/022-25893509
ई-मेल	:	bidhubhushan15@gmail.com

माँ तुम्हें प्रणाम

विधु भूषण ''विधुजी''

प्रकाशक :

सेतु प्रकाशन

9, माधव पार्क विभाग - 2, माधव इन्टरनेशनल स्कूल के पास,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद - 382418

कॉपीराइट © विधु भूषण त्रिवेदी
ISBN : 978-93-87149-63-2

प्रथम संस्करण : 2018

MAA TUMHE PRANAM (POETRY)
By VIDHU BHUSHAN TRIVEDI

प्रथम संस्करण : 2017
द्वितीय संस्करण : 2023

प्रकाशक :
सेतु प्रकाशन
9, माधव पार्क विभाग - 2,
माधव इन्टरनेशनल स्कूल के पास,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद - 382418
(M) 94276 22862

कम्प्यूटर टाईप-सेटिंग : फागुन ग्राफिक्स
48, पूर्वीनगर, घोडासर केनाल, भाडुआत नगर के पास,
घोडासर, अहमदाबाद-380050. (M) 98255 04661
Email : fagungraphics@gmail.com

प्रिन्टर्स : पार्थ ग्राफिक्स एन्ड प्रिन्टर्स
4-FF, श्रद्धा कोम्प्लेक्ष, गोविंदवाडी,
इसनपुर, अहमदाबाद

अखिल विश्व
की सभी मातुश्री के
पावन चरणों में सादर समर्पित।

संदेश

कोटि-कोटि गंगाओं से भी।
पावन होती माँ की ममता।।
कोटि-कोटि सुरभि वृंदों से।
भावन होती माँ की ममता।।
कोटि-कोटि अमृत कण से भी।
लुभावन होती माँ की ममता।।
कोटि-कोटि विपदाओं की भी।
दावन होती, माँ की ममता।।
माँ की ममता पुस्तक देखी।
पुत्र भक्ति की अविरल सरिता।।
माँ की मंगल यशगाथा।
पीयूषयूश से निर्भर भरिता।
माँ की इस सुयोग्य सन्तति को।
मैं भी आशीर्वाद दे रहा।।
माँ के शुभ उत्सर्ग सर्ग को।
मैं भी शुभ संवाद दे रहा।।

-इतिमंगलमाशस्ते
राघवीयो जगद्गुरु रामानन्दचार्य
स्वामी श्री रामभद्राचार्य
(पद्म विभूषण से सम्मानित)

शत्-शत् प्रणाम नमन्!

हुजूर साहेब सरकार

जिनकी एक नज़र ने जीवन की दशा एवं दिशा ही बदल दी-भयमुक्त और चिन्तामुक्त बना दिया। इसके अतिरिक्त दाता मुझे आपसे और क्या चाहिये- माँ की ममता के शब्द, भाव और नामकरण तो आपका ही दिया हुआ है- मेरी औक़ात ही क्या है?

यह पृष्ठ उनके नाम

मोहताज पे करम की नज़र कौन डालता,
तक़दीर थी कि आपके कदमों में आ गये।
* * * * * * * *
वो मस्ती बन के आए हैं तो कैसे लौट जाने दूँ,
तुम्हारे बिन ये दिल कहीं लगता नहीं हम क्या करें बोलो।
(गूलर के फूल से)

इस जमीन की वह आखिरी मुलाकात...

बुधवार 22 अप्रैल 2015, की वह रुपहली सुबह 'माँ' की मूल पाण्डुलिपि लिए मैं मुंबई से कानपुर पहुँचा-अज़ीज कॉटेज कैन्ट कानपुर की सुर्ख़ लाल कोठी। साहब जी अस्वस्थ थे। थोड़ी प्रतीक्षा के बाद उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया। मैंने "माँ" की पाण्डुलिपि और इसे अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर से छापने की बात कही। आजीवन नहीं भूल सकता सरकार की वह रूमानी खिलखिलाहट, वह गंभीरता और मानो दुआ पढ़ते बुदबदाते होंठ। उन्होंने कहा कि चाहें तो इसका नाम "माँ की ममता" रख दीजिये। 'हाँ अवश्य' मेरा जवाब था। साहब ने पाण्डुलिपि दोनों हाथों में लेकर उसे चारों तरफ से कई बार दबाया, उठाया मानों उसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई और वजन का इजाफ़ा कर रहे हों। और हाँ फिर उसको चूमा मानों माँ अपने बच्चे को दुलरा रही है चूम रही है। मेरी आँखों में माँ की तस्वीर आ गई और मैं रोने लगा। साहब की आँखें कुछ नम थीं, बोले 'अरे आपने तो कमाल कर दिया है, माँ पर लिखा है बहुत खूब।' और वे आँखें बन्द कर दो-तीन मिनट तक न जाने क्या होंठ से बुदबुदाते रहे- और फिर जोर से दो बार "माँ" "माँ" कहा उनके होंठ थरथरा रहे थे। सहसा धीरे से बोले भईया छप जाए तो एक किताब जरूर दीजियेगा... यह अजीब खुशनुमा नज़ारा वहाँ दरी में बैठे एक बुजुर्ग श्री संकठा प्रसाद जी, एक अधेड़ उम्र के महाशय एवं शर्म हया और शालीनता की चादर ओढ़े सिर झुकाए बैठी तीन-चार महिलायें अजीबोगरीब नजरों से सब कुछ देख रही थीं- मैं फिर उन्नाव चला गया।

यह जिक्र कर रहा हूँ हफ़्त-कलम और हफ़्त-ज़ुंबान, राहतेजाँ सूफी संत इलाही हज़रत शाह मन्जूर आलम का जिनका दुनिया की शुहरत से दूर-दूर तक कोई वास्ता न था। एक बेमिशाल शख्सियत जिनके 'ख़ानकाह' में गीत गजलों का साज़ो-सुख़न जीवन्त होता था और दुनिया की बलायें उनकी नजरों से पनाह माँगती थीं। आँखें उनकी शोला और शबनम थीं। गंगा-जमुनी सभ्यता और संस्कृति का रूमानी संगम उनके जीवन की पहिचान थी। सागर की अतल गहराई हमेशा उनके व्यक्तित्व से कम रही। और हाँ अज़ीज कॉटेज कैन्ट कानपुर की वह खामोश सफ़क़ कोठी अदब से सीना तान कर कह रही है कि 13 और 14 अक्टूबर 2015 की मध्य रात्रि में जमी और जन्नत का सितारा महामिलन का आनंद ले रहा है- परदा गिर गया है। किन्तु अज़ीज कॉटेज की वह सुर्ख़ लालिमा बयां

कर रही है कि अदब, सलीका, शराफत, तहजीब, सिज़दा, साज़ो-सुख़न, सुर-संगीत और रईश दरियादिल शब्दों का जनम यहीं हुआ था... यह छपी हुई पुस्तक "माँ की ममता" का नामकरण ले मैं आपको अब कहाँ ढूँढूँ, न सरकार आप दिख रहे हैं और न मेरी माँ! किसकी उँगली अब थामूँ? कैसे कहूँ दिलबर आपकी रुखसती, आपका यह परदे में होना मुझे मंजूर नहीं है, कई साल से कुछ आपसे कहना चाहता था-कह नहीं पाया-आज लिख रहा हूँ।

जो कह न सका

उलझा है धन से जन से यह जीवन
तो भी जानो, तुम्हें चाहता है मन

अंतर में तुम हो हे अंतर्यामी
मुझसे मुझको अधिक जानते स्वामी

सब सुख दुःख में भूले रहने पर भी
जानो तुम्हें चाहता मेरा मन

अंधकार मैं पल को छोड़ न पाया
माथे चढ़ा उसे ढो ढो भरमाया

उसे कहीं तज पाता मिलता जीवन
जान रहे तुम तुम्हें चाहता है मन

जाने कब मेरे जीवन का सरबस
तुम अपने जिम्मे कर लोगे बरबस

सब देकर सब पाऊँगा मैं तुमको
तुम्हें चाहता मन ही मन मेरा मन

-विधु भूषण "विधुजी"

शुभाशीष

प्रियवर विधु जी,

"माँ की ममता" गीत संग्रह की अनुपम कृति मुझे मिली। इसे पढ़ते हुए मुझे लगा कि मैं स्वयं इन कविताओं के माध्यम से अपनी दिव्य माँ से साक्षात्कार कर रहा हूँ। जननी और जन्मभूमि की सार्थकता एवं पुनीत प्रेम की अनुभूति को शब्दों से कैसे व्यक्त करूँ? आपका प्रयास सराहनीय है। विश्व के इतिहास में एवं भारतीय संस्कृति में माँ की महिमा का वर्णन है। सर्वप्रथम श्री गणेश जी की मातृभक्ति, छत्रपति शिवाजी का मातृप्रेम, स्वामी विवेकानन्द जी की माता के प्रति अगाध श्रद्धा, अब्राहम लिंकन का मातृप्रेम-भाव अनुकरणीय है। इसी प्रेरणा से एवं माँ के आशीर्वाद से आपने इन कविताओं का सृजन किया होगा।

हमारी वैदिक परम्परा में मांगलिक कार्यक्रमों में सर्वप्रथम मातृ-पूजन एवं शासन व्यवस्था में राजमाता के सर्वोच्च पद का सृजन हमारी विरासत एवं श्रेष्ठ परम्परा रही है। "प्रकृति और माँ" दोनों त्याग, सहनशीलता, सहिष्णुता, सहजता एवं शुचिता का स्वरूप हैं। इनसे सब कुछ लेकर भी हम इन्हें क्या दे रहे हैं? प्रदूषण और वृद्धाश्रम। इस मन की व्यथा को आपने प्रबुद्ध पाठकों के बीच सरल शब्दों के माध्यम से बाँटा है।

पुस्तक प्रकाशित होने पर मुझे एक प्रति अवश्य भेजें। मैं अपनी प्रिय बेटी यशी एवं रिनी को यह अनमोल पुस्तक देना चाहूँगा।

शुभकामनाओं के साथ।

-प्रो. डी.एन. सिंह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई

शुभकामनायें

संदर्भ : अप्रनि/235 दिनांक : 15 अक्टूबर, 2015

प्रिय श्री त्रिवेदी,

आपके द्वारा प्रेषित 'माँ की ममता' नामक गीत संग्रह की प्रति प्राप्त हुई, जिसे पढ़कर महसूस हुआ कि माँ के प्रति प्रेम की सच्ची अनुभूति का सार्थक प्रयास है। बैंक सेवा के दौरान वैधानिक क्षेत्र के जटिल कार्यकलापों के निर्वाहन के बीच आपने अपने कवि मन को जीवन्त बनाए रखा और उन भावों को शब्दों में अभिव्यक्ति दी, वह निःसंदेह प्रशंसनीय है।

'माँ की ममता' गीत संग्रह बालक और माँ के बीच एक सहज संवाद है, जो माँ के स्नेह तथा उसके प्रति सच्चे आदर की भावना का प्रतीक है। मैंने इसमें से कुछ कविताएं पढ़ी हैं, जो मुझे काफी रोचक एवं मर्मस्पर्शी लगी। एक अच्छी प्रस्तुति के लिए हार्दिक बधाई।

मैं इस प्रकाशनाधीन पुस्तक की सफलता की कामना करता हूँ तथा मुझे विश्वास है कि यह कृति पाठकों के बीच लोकप्रिय होगी तथा उनके हृदय में अपना अलग स्थान बनाएगी।

शुभकामनाओं के साथ

भवदीय

अरुण तिवारी

अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक

यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया

शुभकामनायें

'माँ तुम्हें प्रणाम' के प्रवाहक विधु भूषण आज से कोई 43 वर्ष पहले कानपुर के केसा हाउस अब केस्को में रोशनी बन गए थे। मेरे सहपाठी राजेन्द्र चौधरी ने उनसे परिचय कराया, जो कब दिल की तंरगों में समा गये-पता नहीं चला। उत्तर प्रदेश सरकार के अधीन मेरी नियुक्ति ऑडीटर के पद पर लखनऊ विकास प्राधिकरण में हुयी तभी विधु भूषण विद्युत विभाग छोड़कर यूनियन बैंक में लखनऊ आ गये। हम दोनों लोग कानपुर से लखनऊ आते थे। रेलगाड़ी के सफर में उनके काव्य प्रेम की धारा फूटती। उन्नाव के समोसे खाते-खाते कविताओं का सिलसिला हरौनी तक चलता। वो दिन आज भी याद हैं, जैसे कल की बात हो। एक बार इतनी भीड़ थी कि हम दोनों गाड़ी के पावदान पर बैठ गये, उस दिन उन्होंने ऐसी कविताएं सुनायी, जिससे उनके अन्दर आशु कवि को पहचान सका। मैं श्रोता की भूमिका भलीभाँति निभाता।

शायद ही किसी को ज्ञात होगा कि विधु भूषण में एक युग पुरुष बसता है। उनके हृदय में मानवीय संवेदनाओं की धारा बार-बार फूटती है। वे सदैव एक ऐसे संगीत में रमण करते हैं, जिसमें प्रेम और करुणा का स्पंदन इस शरीर को अधिभौतिक संसार का स्पर्श कराता है। मनसा वाचा कर्मणा वे सबको सुख देने के लिए तत्पर दिखायी देते हैं। एक देवदूत की तरह वे लोगों के दुःख-हरण की चेष्टा में संलग्न रहते हैं। साहित्य सृजन की अभिलाषा बचपन से थी, इसीलिए उनकी कविताओं में अनुभूतियों का दृश्य उभरता है। मातृशक्ति के उपासक विधु भूषण ने हर समय ममता का पाठ सीखा और सिखाया भी। अपने अग्रज शशिभूषण त्रिवेदी को वे अपना पिता ही मानते थे, यह अद्‌भुत प्रेम मैंने देखा है। वैसे तो उनका जीवन ही अनुकरणीय है, लेकिन आज के समाज में युवाओं को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। सभ्यता को रेखांकित करने के लिए उनके योगदान को विस्मृत नहीं किया जायेगा। मेरी परम इच्छा है कि उनके सान्निध्य में अधिक से अधिक समय व्यतीत करूँ, क्योंकि वे एक सुधारक की तरह समाज को दिशा देना चाहते हैं। यह गुण उनसे सीखना चाहता हूँ।

विधु भूषण का काव्य भक्ति रस का ऐसा उदाहरण है, जो मानवता के लिए प्रेम और भक्ति का मिलन कराता है। माता के प्रति उनकी अचल भक्ति ने ही उनके काव्य की वाणी दी। उनकी यह मौलिक रचना है, जो माता के लिए समर्पण की भावना से उपजी है।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इसकी अनुभूति कराता यह ग्रंथ नवजवानों की सृजनशीलता को आन्दोलित करने में सफल होगा। गौ, गंगा, गायत्री और तुलसी-ए माताएं हमारे शरीर के लिए अमृततुल्य और मोक्षदायिनी हैं। पृथ्वी माता और भारत माता का स्थान जननी के समान है। असली भारत में, भाभी और बड़ी बहन को माँ का स्थान और बहू तथा छोटी बहन को पुत्री का स्थान दिया गया है। विधु भूषण ने अपनी रचनाओं में यह संदेश देने का प्रयास किया है। देश के मनीषियों व प्रबुद्ध वर्गों को उनकी इस स्वांतः सुखाय की कृति का स्वागत करना चाहिये।

अधिक क्या कहना। सूर्य को दीपक नहीं दिखाया जाता। बस एक कविता 'माँ फिर दीवाली आई है' पर रुककर अपने को संभालना चाहता हूँ। मेरे शब्द समाप्त हो गए हैं, ये अश्रु ही बता सकते हैं कि माँ के लिए ऋणी होना सबके लिए हर क्षण नया अवसर है। इसी तरह विधु भूषण ने अपनी अन्य कविताओं से माँ को सच्ची श्रद्धांजलि दी है, हृदय को चीरकर दिखाने का उपक्रम है। दूसरी कविता 'मेरे सम्मुख तुम कभी न आना' ने तो अभागे कृतघ्न पुत्रों को श्राप ही दे दिया होता, यदि माँ अपने वात्सल्य से कपूत की रक्षा न करती। उनकी एक-एक कविता में जीवन का मर्म है, अर्थार्थ है, गहरा भाव है, पीड़ा है और दर्शन भी। उन्होंने हर दिन अपनी माँ को यादों में संजोया है। बहुत कम लोग हैं इस संसार में, जो माँ को मरने नहीं देते। ऐसे लोगों की आँखों में माता-पिता की झाँकी नित्य देखी जा सकती है।

'माँ तुम्हें प्रणाम' का स्पंदन मन मस्तिष्क से न होकर हृदय से हुआ है। यह विधु भूषण को आत्मा की अविरल धारा है। मैं चार दशकों से उनकी संवेदनशीलता का पारखी रहा। मैं कानपुर में घंटाघर के मोहपास से नहीं उबर सका, लेकिन उन्होंने मुंबई की हवाओं को शायद अपना लिया फिर भी यह दूरी कभी दिल की धड़कनों में बाधक नहीं बनी। विधु भूषण के काव्य प्रेम को कौन नहीं जानता? दोस्तों के बीच वे अपने मधुर संवादों से आकर्षण के केन्द्र में रहते, उनकी अभिव्यक्ति लोगों को दीवाना बना देती। शब्दों के जादू के साथ वे अंतरंग अर्थाथ को बिखेर कर मन में हलचल पैदा करते। अध्ययनशील होने के कारण हर विधा में हस्ताक्षर करने वाले विधु भूषण कहलाये। वे किताबों या विषयों का अध्ययन नही करते, बल्कि जो लोग उनके निकट जाते हैं उनका अध्ययन भी बड़ी गम्भीरता से करते हैं लोगों के चेहरे पढ़ना, आदतों और कार्य-कलापों का अध्ययन करना-उनका सगल है।

इस तरह मौलिकतावश, वे भाषा और साहित्य के चितेरे बन बैठे। मित्र मंडली में उनकी ही पूछ थी और मूँछ भी। हर किसी की नजरें विधु भूषण को खोजती रहतीं। ऐसे दिलों पर राज करने वाले विधु भूषण के लिए सब समर्पित थे। जहाँ तक उनकी प्रस्तुत कृति 'माँ तुम्हें प्रणाम' का प्रश्न है, यह अपने प्रारम्भिक दिनों में आकार ग्रहण कर चुकी

थी। इसलिए उनकी रचनाओं में सब कुछ नैतिक और जटिल अनुभूतियों का संगम है। वे सहज और प्रत्यक्ष दर्शन से अभिप्रेत हैं। उनमें आत्मसाक्षात्कार का रस विद्यमान है। कानपुर-जूही में रहने से उनका काव्य जूही की तरह मंत्र मुग्ध करता है।

विधु भूषण की कविता संग्रह 'माँ तुम्हें प्रणाम' ने साहित्य प्रेमियों के संस्कारों को एक नई ऊर्जा दे दी है, क्योंकि उनके शब्द माँ की गोद में बैठकर बोले गए प्रतीत होते हैं। उनके इस काव्य को पढ़कर मैंने तो मानवीय प्रधानमंत्री जी को पत्र ही लिखकर माँग की है कि ''माँ'' पर एक पाठ प्रथम के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया जाए तो बालमन पर वात्सल्य रस का प्रभाव सदैव अंकित रह सकता है। जो सत्य, अहिंसा, त्याग, धर्म, क्षमा, परहित और मानवता का संदेश देते रहेंगे।

-डॉ. राघवेन्द्र शुक्ल की कलम से

शुभकामनायें

गीतकार कविकुल चूड़ामणि विधु भूषण त्रिवेदी जिन्हें मै मयंक जी कहता हूँ के द्वारा रचित पहली काव्यकृति 'माँ की ममता' समाज के लिए विशेषकर नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का श्रोत बनकर काफी लोकप्रिय हुई है। अपनी अमृतमई धीर, गंभीर वाणी-माधुर्य द्वारा मातृ भक्ति रसाभिलाषी चातको को, जन साधारण एवं बुद्धिजीविओ को दिव्य भावात्मक साक्षात्कार कराने वाले आधुनिक युग के परम तेजस्वी मनीषी विद्वान कविश्री विधुजी ने इस द्वितीय काव्यकृति 'माँ तुम्हें प्रणाम' काव्य में विभिन्न बिखरे हुए रत्नों को संजोकर अपने अनुपम पियूष का जन मानस में वितरण किया है, जोकि शुष्क मानस में नव शक्ति का सिंचन और शांति प्रदान करेगी। निसंदेह यह काव्यकृति समाज में आध्यात्मिक चेतना और आत्मीय संबंधो विशेषतया मातृ भक्ति की भावना को जागृतकर आदर्श परिवार की नीव के लिए मील के पत्थर के रूप में अपनी पहिचान बनाएगी। मैंने 'माँ तुम्हें प्रणाम' काव्यकृति की पाण्डुलिपि पढ़कर आत्मानंद प्राप्त किया है। मैं विधुजी के प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ तथा इस अनमोल कृति की पुष्प सुगंध सौरभ सबके जीवन में स्पंदित हो यही मंगल कामना करता हूँ।

आचार्य पंडित श्रीकृष्ण द्विवेदी
साहित्याचार्य, साहित्यरत्न
श्रीमद् भागवतकथा प्रवक्ता-मानस मर्मज्ञ
कानपुर
मोबाइल-9415726826/8840585687

दो शब्द

मेरी प्रथम काव्य रचना ''माँ की ममता'' का यह नया संशोधित संस्करण है। प्रथम संस्करण की सारी प्रतियां बिना किसी बाजार के बिना मेरे प्रयास के इतनी जल्दी समाप्त हो जायेगी, मुझे कदाचित विश्वास न था। माँ की ममता को पुस्तक का स्वरूप देने में जिस विरह-साधना की पीड़ा से मैं तपा हूँ और उस दौरान मेरी सजल आंखों ने जिस कठिनता से अपने आप को संभाला है, उसे शब्दों में व्यक्त करना मेरे वश में नही। बस इतना जरूर कहूंगा कि माँ की ममता का स्पंदन मेरे मन मस्तिष्क से न होकर हृदय से हुआ है। आत्मा से प्रस्फुटित स्वर-धारा है ''माँ की ममता'' का यह नवीन संस्करण ''माँ तुम्हें प्रणाम''।

दो दिसम्बर 2015 को कानपुर महानगर से प्रकाशित ''माँ की ममता'' यत्र तत्र सर्वत्र इस हाथ से उस हाथ तक होते-होते न जाने कहाँ-कहाँ तक पहुँची मुझे मालूम नहीं। किन्तु इस अन्तराल में माँ को समर्पित श्रद्धा-सुमनों की इन पंखुड़ियों की सुवासित महक ने मुझे जो यश दिया, कवि के रुप में स्नेह दिया और पुत्रवत् अपनत्व दिया, उसके लिए मैं अपने सभी सुधीजन पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, उनको बारम्बार नमन करता हूँ।

मेरे कई पाठकों से विशेषकर माताओं-बहनों की ओर से बड़ी सम्वेदनात्मक प्रतिक्रिया मिली, जिनके ऊपर माँ का दैहिक साया नही रहा। उनसे बस यही अर्ज कि आप यकीन कीजिए कि आपकी पीड़ा को मैंने अपनी डबडबाई आंखों से देखा है। मैंने उनसे मोबाइल में बात करते हुए उनके शब्दों की कंपकपाहट को महसूस किया है। यह रिश्ता ही ऐसा है। स्नेह, ममता की पराकाष्ठा से ओत-प्रोत भावनात्मक रिश्ता, धरती में आने के भी पहले नौ महीने का उदरस्थ रिश्ता, अनमोल रिश्ता। मैं क्या करूं?

सिवाय इन शब्दों के-

मैं नतमस्तक आभार कर रहा,
जो अतिशय अतिप्रिय हैं मेरे।
जिनके तप बल के सम्बल से,
छट गए मेरे दुःख घनेरे।।

मेरी सासें है अति सीमित,
इनकी पद्धूलि लेने दो।
हृदय हमारा उमड़ रहा है,
माँ तुमने मुझे रचा, अब मुझे गीत रचने दो।।

रुद्धकंठ नयनांजलि देने दो,
मुझे आभार व्यक्त करने दो...।।

इन्हीं शब्दों के साथ सर्वप्रथम वन्दनीय गुरूजनों, अपने अग्रज स्मृतिशेष भ्राताओं श्री शशि भूषण त्रिवेदी और श्री चन्द्रभूषण त्रिवेदी जो "सुन्दर बाबू" और "लल्लन बाबू" के नाम से सुविख्यात रहे तथा अपने सभी हितैषी स्वजनों का नमन और आभार व्यक्त करता हूँ। अपने अनुज चिरंजीव बालेन्दु भूषण और अग्रज पुत्र आशीष त्रिवेदी तथा मेरी सहपथ गामिनी मौनप्रिया धर्मपत्नी श्रीमती सरोज त्रिवेदी के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रेषित करता हूँ जिनका सहयोग मेरे भाव-प्रवाह के लिए संजीवनी बना। श्री आशुतोष, अनुराग, शुभम, अर्पित, ऐश्वर्य और अभिषेक मेरे भविष्य के संवाहक तथा चिरंजीव वरुण, आयुष, लविन, कुहू, अग्रिमा और आराध्या "माँ तुम्हें प्रणाम" के नायक और प्रेरक जिनके बिना इस पुस्तक की संरचना असंभव नही तो कठिनतर अवश्य होती। इन बाल-गोपालों की माँओं को मैंने तप की पराकाष्ठा करते देखा है और सचमुच यही विलक्षण अनमोल ममता को देखकर मैं अपनी स्वयं की माँ की तपस्या की कल्पना कर सका, हंस सका, रो सका। साथ ही उनका भी जिन्होंने सदैव मेरे हृदय के उस वीरान कोने को भरने का अथक प्रयास किया जो स्थान दुर्भाग्य से मेरी माँ के वैकुंठवास के कारण रिक्त हो गया था। वह है मेरी बड़ी भाभी श्रीमती कमलिनी त्रिवेदी और श्रीमती स्नेह लता त्रिवेदी - दोनों मातृ-स्वरूपा और अब तो साक्षात मातेश्वरी- इन्हें सादर नमन करते हुए मेरी एक कविता "अनमोल रिश्ते" इन्हीं दोनों के चरणों को समर्पित है। आभार उन सभी बहू-बेटियों का जो मेरे आंगन में हैं या सकल विश्व के हृदयांगन में, मेरी रचनाओं की प्रशंसक मैं इस नारी शक्ति को बारम्बार नमन करता हूँ उसका आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि "माँ तुम्हें प्रणाम" की आराध्य देवि मेरी माँ भी बेटी के रूप में कभी जन्मी होगी, बहन, बहू, पत्नी, माँ, सास, दादी, नानी बनी होगी- दो-दो कुल को पावन करती बहू-बेटियों का पुनः और बार-बार आभार। 52 वर्ष से निरन्तर चली आ रही मित्रता का यहाँ उल्लेख न करूँ यह असंभव है मेरे बाल सख़ा, मेरे साथ हुए युवा सखा, प्रौढ़ सखा और अब सीनियर सिटीजन सखा श्री विरेन्द्र सिंह यादव 1967 से चला आ रहा यह मित्र-भाव, निस्वार्थ, निष्कपट। वे कानपुर में और मैं 30 वर्षों से मुम्बई में- पर यह दूरी हम दोनों को दूर नही कर सकी इस मित्रभाव को मैं कृष्ण-सुदामा का मित्र भाव समझ कर

बस उल्लेख कर रहा हूँ। आभार, धन्यवाद, शुक्रिया शब्द हमदोनों के लिए कदापि नही बने।

और अन्त में मेरे अनन्य मित्र श्री ब्रजेश नीरज, मेरे हृदय की उद्वेलित काव्य सरिता के प्रवाहक उनका और लोकोदय प्रकाशन की समर्पित टीम का हृदय से आभार व्यक्त कर रहा हूँ। मेरी अभी-अभी एक साथ दो काव्य पुस्तकों को लोकोदय प्रकाशन ने जिस तत्परता और आकर्षक साज सज्जा और रूप कलेवर में प्रकाशित किया है उसके लिए मैं ही नहीं मेरी लोकप्रिय रचनायें ''हृदयांगन'' और ''मृगतृष्णा'' भी आपको शुक्रिया अर्ज कर रही है। सुन्दर कलेवर में शब्द सज्जा और आकर्षक मुद्रण लोकोदय प्रकाशन, लखनऊ की विशेषता रही है, इनके योगदान को कैसे भूलूं!

''माँ तुम्हें प्रणाम'' एक उस बच्चे की पुकार है, प्रार्थना है, पूजा है, जिसकी माँ अब इस संसार में नहीं है! किन्तु सकल विश्व की समस्त माताओं में मुझे अपनी माँ के दिव्य-मनोहर दर्शन हो रहे हैं, यह सत्य है!

आपकी प्रतिक्रियाओं आपके सुझावों का मुझे इंतजार रहेगा।

सजल नयन!
विधु भूषण "विधुजी"

मूल मंत्र

समस्त मंत्रों का मूल मंत्र
प्रथम वंदनीय माँ

ध्यान मूलम मातृ मूर्ति,
पूजा मूलम मातृ पादौ।
मंत्र मूलम मातृ वाक्यं,
मोक्ष मूलम मातृ कृपा।।

माँ आप ही तो प्रकाश हैं

माँ,
आप विस्मृत नहीं विश्वास हैं
सम्मुख नहीं पर पास हैं।
ज़िन्दगी के हर तिमिर में
माँ आप ही तो प्रकाश हैं।।

अनुक्रमणिका

1.	माँ सरस्वती ऐसा वर दो	29
2.	मातृ वंदना	31
3.	माँ मैं नहीं जानता प्रभु को	32
4.	माँ स्वर्ग से भी महान	33
5.	माँ की याद में	34
6.	माँ	36
7.	अम्मा की पहचान	40
8.	माँ तो केवल माँ होती है	41
9.	अये माँ यह कैसी मजबूरी	43
10.	अम्मा से दिल की बात	45
11.	माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ	47
12.	किसने लिखा, कहीं पढ़ा पर माँ में पाया	50
13.	माँ तुम्हारी पहचान	53
14.	गंगा यहाँ बहा करती थी	55
15.	माँ तुम मेरी यादों में	57
16.	अपने बबुआ के कैसे भाग्य सँवारे	59
17.	गाँव के किनारे नीम का वह पेड़	61
18.	माँ कुछ बातें हैं कहनी	66
19.	आ जाओ बस आ जाओ	68
20.	माँ तुम कहाँ?	71
21.	तुमसे तुम्हारी शिकायत कृपानिधान	73
22.	मैंने महाकाल को बाँध लिया है	75
23.	माँ तुमने ही यह मान दिलाया	76
24.	अब्राहम लिंकन का मातृप्रेम	77
25.	नीतू की कलम से	78
26.	तुम बड़भागी हम हतभागी	80
27.	तब याद तुम्हें क्या आती होगी?	81

28.	नमन	82
29.	काश! माँ आज तुम होती	83
30.	माँ फिर दिवाली आई है	87
31.	दिव्यमूर्ति तेरे दर्शन से	90
32.	हम कितने बौने हैं	91
33.	विवेकानन्द ने कहा था	92
34.	"माँ" की वाणी फूटी थी	93
35.	माँ मैं कैसे तेरा शृंगार करूँ	94
36.	तुम रामायण पढ़ती जाती थी	95
37.	माँ के चरणों को अविरल धोने दो	97
38.	इक थी माई	99
39.	घर की देहरी हम आबाद करेंगे	104
40.	मेरे सम्मुख तुम कभी न आना	106
41.	माँ कितने पापों से तुमने उन्मुक्त किया है	108
42.	फुग्गों को मैं देख देख ललचाता हूँ	109
43.	माँ मेरा अस्तित्व न होता!	111
44.	मुझे चाहिए बस वात्सल्य मूर्ति	113
45.	सच मानो मेरा दम घुटता था	114
46.	माँ तुम ही मेरा पाप हरो	116
47.	तुम लालटेन सी दिखा रहीं	118
48.	मानो मेरा कोई मुझको कहीं बुलाता है	119
49.	करहु कृपा सुत सेवक जानी	120
50.	श्वासों में बस स्पन्दन है	121
51.	माँ कैसे प्रभु की कोमलता पाऊँगा	122
52.	हे कुल देव, तुम इनके हाथ पकड़ना	124
53.	जब जब भी मुझको जन्म मिले	126
54.	अनमोल रिश्ते	127
55.	अलविदा माँ!	128
56.	श्रद्धा सुमन	130
57.	मेरा परिचय	131

माँ सरस्वती ऐसा वर दो

माँ सरस्वती ऐसा वर दो
माँ के वंदन को अपना स्वर दो।

ऐसा भाव जगा दो माँ
ऐसी लगन लगा दो माँ
वीणा वादिनी तुम आ जाओ
स्वर-शब्दों में तुम छा जाओ।

माँ सरस्वती ऐसा वर दो
माँ के वंदन को अपना स्वर दो।

मैं भावहीन, मैं कर्महीन
रुद्ध कण्ठ मैं स्वर विहीन
तुम भावों की आराध्य देवि
तुम स्वर लहरी तुम कला प्रवीन।

मैं शक्तिहीन, मैं भक्तिहीन
पर भावों का बहता अविरल सागर
जननी के चरण पखारूँ मैं
भर दो माँ! मेरी खाली गागर।

माँ के चरणों में झुका जा रहा
मुझको अकिंचन ही रहने दो
चरणों की पावन धूलि से
मैं आतुर अहोभाग्य सजने दो।

माँ सरस्वती ऐसा वर दो
माँ के वंदन को अपना स्वर दो।

मातृ वन्दना

जिन चरणों के नीचे पनपे
हुए बड़े हम हुए खड़े,
उन चरणों की छाया में
रज-राखी में रहे पड़े।

जिन चरणों ने हम बच्चों को
माँ बनकर अपना वात्सल्य दिया
वे ही शतदल चरण
हमारे हृदय पटल पर रहें पड़े।।

माँ मैं नहीं जानता प्रभु को

नहीं चाहती अपनी पूजा पुष्प मंत्र या वंदन से
चाह नहीं उसको फल मेवा मिष्ठानों के व्यंजन से

घंटी शंख कीर्तन अजान सब उसकी वाणी से झरते हैं
माते तू कितनी निर्मल आँचल में अमृत आँखों में आँसू रहते हैं

वात्सल्यमयी माँ यह सृजन तुम्हारा क्या अद्भुत कौतुक है
प्रभु को जाना छुआ नहीं तुममें ही देखा सारे तीरथ हैं।

माँ स्वर्ग से भी महान

संत कहते हैं कि माँ के चरणों में स्वर्ग होता है। भगवान राम ने भी माता को स्वर्ग से महान बताया है। ऋग्वेद में ऋषि माताओं से आग्रह करते हैं कि जल के समान वे हमें शुद्ध करें। वे हमें तेजवान और पवित्र बनाएँ। भागवत-पुराण के अनुसार माताओं की सेवा से मिला आशीष सात जन्मों के दोषों को दूर करता है। उसकी भावनात्मक शक्ति संतान के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती है। ऋग्वेद के एक मंत्र में माँ की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि हे ऊषा के समान प्राण दायिनी माँ! हमें महान सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करो। तुम हमें नियम-परायण बनाओ। हमें यश और अद्‌भुत ऐश्वर्य प्रदान करो। तुम हमें नियम-परायण की शिक्षा देकर मानवता के गुणों से सिंचित करो। इस मंत्र के माध्यम से ऋषि यह सिद्ध करना चाहते हैं कि माँ की शक्ति अपार होती है, लेकिन इसका लाभ श्रद्धावान और सेवा भाव से भरपूर संतान को ही मिलता है। यदि वे माँ के हृदय को ठेस पहुँचाते हैं, तो निश्चित तौर पर आशीष तरंगें निष्क्रिय हो जाती हैं। ऋग्वेद के एक दूसरे मंत्र में ऋषि स्पष्ट कहते हैं कि माता-पिता का पवित्र धीर, विनम्र और अग्नि तुल्य तेजस्वी पुत्र अपनी शक्ति से संसार को पवित्र करता है। वेदों में माता को अम्बा, देवी, सरस्वती, शक्ति ज्योति, उषा, पृथ्वी आदि से संबोधित किया गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में पितामह भीष्म कहते हैं कि भूमि के समान कोई दान नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं, सत्य के समान कोई धर्म नहीं, दान के समान कोई पुण्य नहीं। चाणक्य नीति में कौटिल्य कहते हैं कि माता के समान कोई देवता नहीं है। माता परम देव होती है। माता की सेवा के साथ-साथ पिता, गुरुओं और वृद्धजनों की सेवा करने वाला संसार में यश प्राप्त करता है। उसकी आलोचना करने का साहस उसके शत्रु भी नहीं कर सकते हैं। वास्तव में माता स्वयं में एक पवित्रतम शक्ति है जिसमें समस्त देवी-देवताओं का वास है। उसकी सेवा ही सर्वोच्च धर्म है। उसकी कृपा का सुमरिन सच्ची प्रार्थना है- आराधना है।

माँ की याद में

माँ तो मेरी चन्दन वन थी
चंदन वन थी, स्वर्णबदन थी
महक रही थी, चमक रही थी
हीरे जैसी दमक रही थी

वह कस्तूरी थी, हम मृगनयनी की
हम ढूँढ रहे थे उसको निशिदिन
मंदिर मस्जिद - काबा काशी
वह तो रही पास हमारे प्रतिदिन

कहाँ जल गया वह चन्दन वन
कहाँ खो गया स्वर्णबदन वह
कहाँ गई वह माँ की ममता
सूख गई अब जीवन सरिता

अब तो शेष बचा है क्रंदन
संबंधों का नित विच्छेदन
जीवन अब रसहीन हो गया
तुमको खोकर अब दीन हो गया।

जीवन अब रसहीन हो गया
तुमको खोकर गमगीन हो गया
मछली सा मैं तड़प रहा माँ
जीवन अब जल हीन हो गया।

माँ

माँ सम्वेदना है
रामायण है
गीता है
कुरान है
गुरुवाणी है
बाइबिल है
सूफी संतों की
गंगा है
जमुना है
सतलज कावेरी
और ब्रह्मपुत्र मंदाकिनी सी
माँ
काबा है
काशी है
तीर्थराज प्रयाग
येरूशलम
अमरनाथ की
शीतल ऊँचाई
मानसरोवर सी
स्वर्णमंदिर है माँ
माँ
ममता है

समता है
पीड़ा सहकर
मीठी मुस्कान है
माँ
सृष्टि है
दृष्टि है
पूजा है
आरती है
अष्टगंध रोली चंदन है
माँ
लय, ताल, सुर
कर्णप्रिय वाद्ययंत्र
एक सजीव गीत है
गान है
छन्द है
कविता है
वन्द है
चौपाई है
माँ, माँ
स्वर है, व्यंजन है
अलंकार, समास है, रस है,
माँ
श्लोक, छन्द गीतिका
गजल है माँ
विराम नहीं
अविराम है
माँ

एक वाटिका है
हृदयांगन है
वृन्दावन है
माँ
सबके साथ भी
बहुत अकेली है
माँ
सेतु है
माँ
परिवार की
अन्नपूर्णा है
संपूर्णा है
अपने आप में सिमटी पर सबकी है
माँ
छोटा एक शब्द नहीं
महाकाव्य है
महाग्रन्थ है
माँ
महापुराणों की
पुराण है
माँ
आओ इसे पढ़ें
कुरान की पाक आयत की तरह
कबीर की साखी
तुलसी की रामायण की तरह
गीता के श्लोकों की तरह
क्योंकि माँ के पाँव के नीचे

पैगम्बर ने कहा
जन्नत बसती है
मंदिर मस्जिद
भटक कर भी
न कर सका हासिल तू
वह सब
अष्ट सिद्धि नव निधि
विमल भक्ति
शक्ति
माँ के चरणों में
सुलभ है
सदा रहती है
यह जहाँ खड़ी हो जाये
वही से तो
निर्मल गंगा निकलती है
भाषा विज्ञान
शब्द विन्यास
सब खंगाल डाला
माँ की ममता का
माँ का
पर्यायवाची ढूँढ रहा हूँ
पर नहीं मिला
आज तक।

अम्मा की पहचान

तुम कोमल से भी कोमलतम
तुम सुन्दर से भी सुन्दरतम।
तुम ध्यानी, ज्ञानी योगी रूपा
तुम कोलाहल में भी शान्त स्वरूपा।।

तुम श्रद्धा हो तुम पूजन हो
तुम गीता हो तुम रामायण।
तुम कुरान की आयत हो
ईसा मसीह की न्यामत हो।।

शक्ति पुँज तुम शक्ति स्वरूपा
माँ दुर्गे सा रूप अनूपा।
भोले बाबा सी तुम वीत विरागी
मोह-जाल में रहकर भी त्यागी।।

तुम मन्दिर की शंखनाद
तुम मस्जिद की हो अजान।
तुम मरियम की ज्योति महान
गुरुवाणी की मीठी जुबान।।

तुम अजमेर शरीफ की शहंशाह
संतों पीरों की बादशाह।
माँ तुम गीत गजल की रसधारा
तुम भजन कीर्तन में वाह वाह।।

माँ तो केवल माँ होती है

माँ तुम कितनी भोली हो
भोले-बाबा जैसी तुम माँ।
वरदानों की झोली हो
माँ तुम कितनी भोली हो।।

जब से होश सम्भाला तुमने
साकार ब्रह्म को पहचाना।
जीवन के बंधन में रहकर भी
निर्विकार मन अपनाया।।

जीवन में बहुरंगी रिश्ते
बनते और बिगड़ते।
मोहजाल के हैं सब बंधन
बनते और फिसलते।।

इन रिश्तों से क्या लेना देना
माँ तो केवल माँ होती है।
जब हम हँसते दुनिया हँसती है,
जब हम रोते, तब बस माँ रोती है।

इसीलिए तो मैं कहता हूँ
माँ तो केवल माँ होती है।।

वे तो परमपिता हैं सबके
उनकी महिमा हम क्या गायें।
दयाशील ममतामयी माँ में
उनका विराट रूप ही पायें।।

मातु पिता ही सब कुछ हैं
गणपति जी ने हमें बताया।
ढूँढ़ों यदि धरती पर ईश्वर
माँ के स्वरूप को समझाया।।

मत भटको अब तुम काबा-काशी
और न पलटो पन्ने-पोथी।
मस्तक नहीं झुका माँ के चरणों पर
तब समझो सब पूजा थोथी।।

जिसकी काया से हम जन्में
आओ उसे प्रणाम करें।
जिसका दूध रगों में मेरी
आओ उसे सलाम करें।।

माँ तो केवल माँ होती है
आओ उसे प्रणाम करें।।

अये माँ यह कैसी मजबूरी

अये माँ ये कैसी मजबूरी
तुम हो ऐसी और यह दूरी
माँ यह कैसी मजबूरी।

प्रसव वेदना की पीड़ा सह तुमने हमको जनम दिया।
अनवरत अभावों को सहकर वात्सल्य सुधा से पाल दिया।।

मेरी थोड़ी-सी पीड़ा से माँ तुम हर दम बेचैन रहीं।
मान मनौती पूजा अर्चन, जीवन भर तुम लीन रहीं।।

जीवन के अब इस पड़ाव में बोलो मेरी यह कैसी मजबूरी।
तुम हो ऐसी और यह दूरी अए माँ यह कैसी मजबूरी।।

जब हम अशक्त थे माँ तब छाँव घनी थी तेरी।
माँ दुर्गा से बढ़कर भी माँ सशक्त थी मेरी।।

अब तुम अशक्त हो माँ तो हम भी निर्बल होते जाते।
पालन पोषण का ऋण भी हम नहीं चुका हैं पाते।।

शायद
इसीलिए माँ का ऋण सुर मुनिजन नहीं अदा कर पाते।
हम तो निर्बल मानव ठहरे तेरी थाह नहीं पा पाते।।

बड़ भागी हैं वे जो नित तेरे सम्मुख हैं रहते।
तेरे नयनों की ज्योति में अपने भाग्य सँवरते।।

पर माँ हम व्याकुल इस पीड़ा से तेरे काम न आ पाये।
जाना तो मजबूरी है माँ पर तुम ही बोलो कैसे जायें।।

मेरी अंतर्पीड़ा को माँ बस तू ही केवल पहिचाने।
प्रभु की हम क्या बात करें उनकी माया वो ही जाने।।

तेरी पीड़ा को हर लें वे बस यही प्रार्थना मेरी।
हम निर्बल वे सशक्त हैं वे ही समझें यह मजबूरी।।

अये माँ यह कैसी मजबूरी।
तुम हो ऐसी और यह दूरी।।

अम्मा से दिल की बात

हम अच्छे हैं तुम कैसी हो
बदल गई या बिल्कुल वैसी हो।
खाना खाया या भूखी हो
खुश हो या हमसे रूठी हो।।

तुम को मैं इक बात बताऊँ
तुमसे अब क्या राज छिपाऊँ।
ममता की मानो मौत हो गई
प्रेम भावना सौत हो गई।।

मन आकुल है तन व्याकुल है
मानो सब कुछ शोकाकुल है।
इस सूने घर से उस घर तक
इस आँगन से हृदयांगन तक।।

ढूँढ़ रहा हूँ तुमको अम्मा
कहाँ खो गई हो नील गगन में।
रची बसी हो तुम कण कण में
हम सबके मन में तन मन में।।

अब मेला वीरान हो गया
वीरान हो गया श्मशान हो गया।
अब बातें अपनों अपनों की
बीती बातें हैं सपनों की।।

सपने भी अब धुँधले हो गए हैं
उजले तन, मन काले हो गए हैं।।

किसके आँचल में सिसकूँ मैं?
कौन अश्रु ये पोछेगा,
कौन निहारेगा सूने नयनों से।
मैं भूखा हूँ या हूँ प्यासा।।

कौन बतायेगा यह मुझको
दिशासूर है या बुधवार है।
बबुआ आज नहीं जाना तुम
आज नहीं जाना बबुआ तुम।।

कहते कहते तुम मौन हो गई
तुम स्वर्णप्रभा से साँझ हो गई
मैं नहीं गया, तुम चली गई
मैं रुका रहा, तुम चली गई
मैं रहा देखता, तुम चली गई।।

माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ

माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ
मंत्र मुग्ध हो जाए मन
मन की व्यथा तरल हो जाये
आँखों में आँसू आ जायें
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ कुछ ऐसी गजल सुनाओ
सूने नयन सजल बन जाये
जीवन जटिल सरल बन जाये
मन के गरल सुधा बन जाये
करुणा की रसधार बहाओ
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ कुछ ऐसी तान सुनाओ
मन का अंधकार मिट जाये
रूठे परिजन अपने हो जायें
टूटे रिश्ते फिर जुड़ बन जायें
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ कुछ ऐसा राग सुनाओ
सबके मन विशाल हो जायें
मन की ज्वाला शीतल हो जाये
मन की तपन शमन हो जाये
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ कुछ ऐसा छन्द सुनाओ
रामायण मन में छा जाये
हम राम लखन भरत बन जायें
कौशल्या के पुत्र कहायें
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ कुछ ऐसा भजन सुनाओ
तन मन मगन गगन हो जाये
मन ईश्वर के वश हो जाये
नयनों में छवि माँ तेरी बस जाये
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

बहुत व्यथित मेरा मन है माँ
आ जाओ तुम आ जाओ
कहाँ छुपी हो बतलाओ
अब आ जाओ बस आ जाओ
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ इसीलिए कुछ गीत सुनाओ
मन में ज्वार भरा है मेरे
आँखों में सागर है घेरे
हम अबोध बच्चे हैं तेरे
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ
शुष्क हृदय में प्रीत जगाओ
भरत मिलन की कथा सुनाओ
कृष्ण-सुदामा की बात बताओ
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

इसीलिए कहता हूँ माँ तुम
फिर कुछ ऐसा गीत सुनाओ
तेरी छवि हम फिर पा जायें
तेरी ममता में खो जायें
माँ कुछ ऐसा गीत सुनाओ।।

माँ फिर कुछ वैसी कथा सुनाओ
मन की जफा वफा हो जाये
तू जागे और मैं सो जाऊँ
तेरे आँचल में खो जाऊँ
माँ कुछ लोरी गीत सुनाओ।।

किसने लिखा, कहीं पढ़ा पर माँ में पाया

ब्रह्मा, विष्णु, महेश-सृजन, पालन और जीवन-ज्ञान इन कार्यों को पूरा करने के लिए तीन-तीन ईश्वर को प्रगट होना पड़ा है किन्तु ये तीनों कार्य एक माँ बड़ी सहजता के साथ करती है- इसीलिए इसे तीनों देवों से भी श्रेष्ठ कहा गया है।

प्रभु चाहते हैं पुनीत प्रेम
माँ
पुनीत प्रेम करती है किससे?
सिर्फ और सिर्फ
अपने बच्चों से
बिना स्वार्थ-आकांक्षा के।

*** *** *** ***

रूह के रिश्तों की ये
गहराइयाँ तो देखिये
चोट लगती है हमें
और चिल्लाती है माँ

*** *** *** ***

दश लाख बिच्छुओं के डंक मारने से
जो पीड़ा होती है-ऐसी प्रसव पीड़ा
जिसे माँ बालक का मुँह देखते ही
मुस्करा कर भूल जाती है,

दौड़ भाग कर जीवन में
इतना भी माँ को दे नहीं पाया
महफूज रहूँ मैं टोनों-टटकों से
माँ न इसका जितना दाम चुकाया।
*** *** *** ***

माँ की आँख दरे मस्जिद की तरह खुलती हैं,
वरना हर आँख इक रस्म अदा करती है।
*** *** *** ***

मेरे प्रभु! तुम माँ को धन्यवाद दो,
जिसने मुझे बताया कि तुम कौन हो।
*** *** *** ***

लाइलाज है मोतियाबिन्दु दिखता नहीं इक अरसे से।
मेरे कदमों की आहट से पहचान लेती है मुझको अम्मा।।
*** *** *** ***

मैं तो थककर आया कुछ कहा भी नहीं।
थाली परस के ले आई मेरी जर्जर अम्मा।।
*** *** *** ***

अँधेरे कमरे में सो रहा हूँ बिस्तर में।
कंपकपाते हाथों से रजाई लाकर उढ़ा देती है अम्मा।।
*** *** *** ***

बड़ी रात हो गई आज घर पहुँचते-पहुँचते।
चौखट पे इंतजार में खड़ी है बेचैन अम्मा।।
*** *** *** ***

मेरे धरती पे आने के पहले से, यह साँसों का रिश्ता है।
मेरी जरा सी उलझन से परेशां हो जाती है अम्मा।।
*** *** *** ***

मैं ना प्यासा रहा ना भूखा।
इस मकां में रही जब तलक मेरी अम्मा।।
*** *** *** ***

मेरी बीबी मेरे बच्चे हैरानियत से देखते हैं मुझको।
माँ के हाथ एक गिलास दूध न पियूँ तो चपत लगा देती है अम्मा।।
*** *** *** ***

मुट्ठी में बन्द चन्द सिक्के कभी देता हूँ उसे!
खाली बटुआ है पर ना ना कहके मुस्करा देती है अम्मा।
*** *** *** ***

मैं दुनिया की नजर में अब समझदार ही सही।
पर बच्चा ही रहूँगा जब तलक घर में है अम्मा।।
*** *** *** ***

मेरे घर में जादू टोने, टटके नहीं आते।
जब तलक कजरौटा लिए खड़ी है अम्मा।।
*** *** *** ***

आईना सा टूट गया हूँ बिखर गया हूँ मैं।
आँख भर आई है सूनी चौखट पर अब नहीं अम्मा।

माँ तुम्हारी पहचान

तुम गहराई की अनन्त नींव
ऊँची हो इतनी ज्यों नभ अनन्त।
मानवता की तुम सृष्टि महान
क्षमा दया तेरी पहचान।।

त्याग तपस्या की तुम मूरत
धवलप्रभा सी तुम मन मोहक।
सम्पूर्ण स्वर्ग का माँ तुम में निवास
सरला हो तुम, तुम में निर्मलता का वास।।

माँ हृदय तुम्हारा मान सरोवर
हस्त तुम्हारे वरद हस्त।
माँ सरस्वती की वीणा हो तुम
मृदु वचनों की अतुल खान
तुम हो महान तुम हो महान।।

तुमने तो दुःख के सागर को
हँसते हँसते पार किया है।
अपनी इन गहरी आँखों में
पीड़ा को भी बाँध लिया है।।

पर मन तो तेरा भी रोया है
फूट फूट कर फफक फफक कर।
माँ आँखें तेरी खामोश रहीं
तू रोई भी चुपके चुपके पर।।

कहाँ खो गई वह विराट छवि
अब किसके आँचल को हम थामें
जाग रहा हूँ कब से अम्मा
अब वह लोरी कौन सुनाये?

गंगा यहाँ बहा करती थी

मैं रस्ते चलते एकटक उस बूढ़ी सूनी आँखों को देखा करता हूँ।
माँ को मैं हर बूढ़ी सूरत में बोझिल मन खोजा करता हूँ।।

उन सूनी आँखों से लगता गंगा यहाँ बहा करती है।
आँखों की पुतली के नीचे ममता सदा बसा करती है।।

आँखों में लगता ये बिन्दु नहीं शंकर की बटिया काली काली।
एक नहीं दो दो शंकर-थिरक रहे क्या सुन्दर छटा निराली।।

इन आँखों में देख रहा ममता का सागर मचल रहा।
इन आँखों से अब लगता मुझको माँ का आँचल पिघल रहा।।

इन आँखों में देख रहा भूमण्डल सारा नाच रहा।
तीरथ सारे नदियाँ सारी तुलसी अपनी रामायण बाँच रहा।।

क्या-क्या देख रहा इन आँखों में मैं डरता हूँ अकुलाता हूँ।
माँ सर पर मेरे हाथ फेरती कहती पगले मैं ही तेरी माता हूँ।।

तुम भूल गये पहचान हमारी पर माँ बेटे को कैसे भूले?
मेरे तन मन में तुम बसे प्राण आओ माँ तुमको गोदी में ले ले।।

मेरे जर्जर हाथों में कम्पित पाँवों में देखो अब भी कितना बल है।
आँखें है निस्तेज पर तुम्हें देखती मेरा आँचल भी सम्बल है।।

तेरे जीवन का हर पल, पल पल मुझको याद आ रहा।
जो मेरे मन में बसा हुआ है वह रह रहकर मुझको याद आ रहा।।

ये आँखें सूनी हैं अब सूनी ही रहती तू नहीं सुनाता किलकारी।
मैं अपनी सूनी बगिया में राह देखती तू आएगा बन फुलवारी।।

इंतजार में अब ये आँखें सूनी और बहा करती हैं।
तू फूले फले सदा जीवन में, आँखें यही दुआ किया करती हैं।।

मैं रस्ते चलते एकटक उस बूढ़ी सूनी आँखों को देखा करता हूँ।
माँ को मैं हर बूढ़ी सूरत में बोझिल मन खोजा करता हूँ।।

माँ तुम मेरी यादों में

माँ तुम मेरी नन्हीं मुन्नीं यादों में
अक्सर ही आ जाती हो।
जब भी मैं रोता, पास मेरे
चुपचाप चली आती हो।
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

मेरी खुशियों से खुश होती
तुम हँस देती हो अक्सर।
मेरे दुःख की काली रातों में
तुम चलती हाथ पकड़कर।।
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

भूख नहीं है, फिर भी
कुछ खाने को देती रहती हो।
प्यास नहीं है तब भी माँ
ममता बरसाती रहती हो।।
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

आज मन उदास है, तन व्याकुल है
माँ याद तुम्हारी आती है
तुम हो मेरे आस-पांस
अहसास दिला भर जाती है
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

छूने को आतुर मैं भाग रहा हूँ
पर पास नहीं तुम अब आती हो।
दौड़ भाग कर हार गया माँ
तुम दूर खड़ी क्यूँ मुस्काती हो।।
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

ममता का हाथ लिए माँ
फिर क्यूँ ऐसा तुम करती हो।
काल पाश के बंधन वश
यह पीड़ा शायद तुम सहती हो।।
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

समझ गया हूँ जान गया हूँ
आँचल में लिपट न पाऊँगा
बेबस सा मैं सोच रहा माँ
तेरी गोदी में अब सिमट न पाऊँगा
माँ तुम मेरी यादों में, चुपचाप चली आती हो।

अपने बबुआ के कैसे भाग्य सँवारे

दुनिया में ऐसा लाल बता दो,
ज्योतिष से माँ की जो खुशहाली माँगे।
माँ की पीड़ा से व्याकुल होकर,
नंगे पैरों मंदिर मस्जिद भूखा ही भागे।।

ऐसा भी देखा है क्या?
जो माँ का व्रत रखता हो।
माँ तुम मेरी रहो सलामत
बस यही मंत्र जपता हो।।

ढूँढ़ो-ढूँढ़ो मिल जाए तो
कृपया मुझको तुरत बतलाना।
मैं तो थककर बैठ गया अब
तुम मुझसे उसको मिलवाना।।

पर दुनिया उन माताओं से भरी पड़ी है
जो केवल बच्चों का भाग्य पूछती।
ग्रह-दोषों की तपन स्वयं सहकर
पेट काट चुपचाप जूझती।।

मंदिर मस्जिद तो बड़ी बात है
पेड़ों की भी पूजा करती।
पत्थर की बटिया या मजार पर
बेरहमी से माँ अपना माथा घिसती।।

निर्जला व्रत रह नंगे पावों माँ
किसको किसको तुम मना रही हो।
और रात के सन्नाटे में,
पैरों के छाले खुद तुम दबा रही हो।।

अपना सुख दुःख नहीं पूछने
जाती त्रिपुंड पंडित के द्वारे।
पर जन्म कुंडली लिए घूमती,
अपने बबुआ के कैसे भाग्य संवारे।।

अरे यह कैसा अद्भुत रिश्ता है
मैं किस चक्र-व्यूह में फँसा जा रहा।
माँ तेरी पावनता की गंगा में,
ममता के सागर में देखो मैं बहा जा रहा।।

गाँव के किनारे नीम का वह पेड़

गाँव के किनारे नीम का वह पेड़!
कोई नहीं जानता किसने लगाया कब लगाया
सैकड़ों बरस पुराना है वह
दादा दादी नाना नानी कहा करते थे
कोई नहीं जानता कितनी जेठ की
दुपहरी में तपा है वह नीम का पेड़!
अनगिनत बारिश के थपेड़े
और शीत की कँपकपी से कंपा है वह पेड़!
बसन्त में मुस्कराया है
और पतझड़ में फूट-फूटकर रोया है
कोई दातून तोड़ता
कोई ढेर सारी नीम की पत्तियाँ
दाँत साफ करता-जीभ भी
और चमड़ी के रोग भगाता
तरह-तरह के नुस्खे बनाता
और कभी कुल्हाड़ी और कभी
बेरहमी से आरी चलाता
हँसता और खुश होता
होली की आग में
मिलन के त्योहार में
दो चार डंगालें तोड़
सारा गाँव हुड़दंग के साथ

होली मनाता।
गाँव के किनारे नीम का वह पेड़!
गाँव में किसी के घर
शादी बारात में
पूजा पाठ में
इतराता मानों उसके पोते परपोते का
जलसा है और
कन्या की विदाई में
सारी पत्तियाँ झुकाकर
टहनी लचाकर
विनयशीलता-सहनशीलता की
सीख देता और
फफक फफक कर रोता
गाँव के किनारे नीम का अकेला वह पेड़!
और मातम में,
पूरे तेरह दिन
मौन खड़ा रहता न पत्ती हिलती
न खुद हिलता
गाँव के किनारे खड़ा नीम का वह पेड़!
किसी ने पर नहीं देखा
किसी को एक लोटा जल चढ़ाते
पूड़ी हलवे का भोग लगाते
बतासे चढ़ाते
हाँ सबने देखा है
तपती दोपहरी में
चारपाई डाले ठंडी हवा खाते
तमाम लोग

और बारिश में
छाँव लेते
बहुत सारे राह चलते लोग
गाँव के किनारे नीम का वह पेड़!
परदेश से आज
बहुत साल बाद गाँव आया हूँ
बूढ़ा नीम का विशाल पेड़
सूखकर जर्जर ठूठ बन गया है
बहुतों की जान अटकी है
ठूँठ में बहुत लकड़ी है
रात के अँधेरे में
गाँव के सफेद पोश लोग, राहगीर
जो स्वयं और उनके पिता-बन्धु दादा परदादा
इसकी शीतल छाँव में सोते थे
जागते और चैन मनाते थे
अब आरी चलाते हैं
हृदय चीर फिर ठूँठ पर कुल्हाड़ी चलाते हैं
कोई कहता है यह रास्ते का रोड़ा है
कोई कहता हटाओ इसे यह भूत का बसेरा है
सोचता हूँ माँ!
परदेश से चंद कागज के टुकड़े कमाकर
बहुत कुछ खोकर
नहीं-नहीं सब कुछ खोकर
वापस गाँव लौटा हूँ
चलचित्र की तरह सब बदल गया है
संवेदनायें, भावनायें, भाईचारा
ईमान, धर्म, नाते, रिश्ते

गाँव के घर, घर के आँगन
विधवा और सुहागन
गाँव का बचपन, गाँव की शान,
गाँव का जवान
और यहाँ तक कि
कब्र में पैर लटकाये
गाँव के बूढ़े बुजुर्ग-रहनुमा।
खो गई है मंदिर की घंटी
और मस्जिद की अजान
पुजारी और मौलवी
भाई-भाई ने खो दी अपनी पहचान
गाँव के किनारे खड़ा था कभी नीम का वह पेड़!
उसे कुछ नहीं दे सका माँ,
न तुम्हें
नीम के पेड़ की तरह कल्प वृक्ष सी माँ
तुम कब जन्मी
और कब क्या-क्या सहा
अहसास तक न होने दिया
अंनन्त शीत ताप बारिश पतझड़
सहकर कितनी छाँव दी है तुमने माँ
खुद कटकर, गलकर और हाँ जल जलकर
निर्मल तन दिया है माँ
सुख और दुःख के भवसागर में
हँसी कम पर कितना रोई हो माँ
गर्मी में शीतलता, बारिश में छाँव बन
कंपकपाती ठंड में खुद जलकर
प्रचंड धूप दी है माँ

आज जर्जर ठूँठ नीम की तरह
सब कुछ ओझल, बोझिल हो रहा माँ
इस ठूँठ में तुम नजर आ रही हो माँ
विक्षिप्त सा सोचता हूँ
दौड़कर लिपट जाऊँ
और जी भर कर रोऊँ
अब नहीं दिखता गाँव के किनारे खड़ा
नीम का वह पेड़!
और न तुम माँ।।

माँ कुछ बातें हैं कहनी

माँ कुछ बातें हैं कहनी
कुछ बातें हैं बस तुमसे कहनी।
इक चेहरा मैं खोज रहा हूँ
मिलता जुलता माँ जैसी अपनी।।

चेहरे तो कई घूम रहे हैं, आँखें फिर भी खोज रही हैं।
दाँव पेंच के इस दलदल में आँखें सबको तौल रही हैं।।
पितृविहीन बालक हम, दादा-अम्मा की ममता ने पाला पोसा।
बिता दिया जीवन अभाव में हाय, भाग्यविधाता को नहीं कोसा।।

माँ की ममता की छाँव नहीं अब
मेरी तपन कहाँ जायेगी।
नहीं दीखता ठाँव कहीं अब
यह विश्राम कहाँ पायेगी।।

कोई छाँव दिखा दो ऐसी थके बहुत हम सो जायें।
कोई राह दिखा दो ऐसी बिछड़े परिजन अपने हो जायें।।
उँगली मेरी थाम सके अब नहीं मिल रहा कोई ऐसा।
मत हो उदास मैं साथ तेरे नहीं कह रहा अब कोई ऐसा।।

माँ बनने को सब हैं आतुर अरे! पर मैं नहीं चाहता सौतेली माँ।
अबोध शिशु का मन जो तोड़े अरे! नहीं चाहता ऐसी भी माँ।।
ढूँढ़ चुका हूँ हार चुका हूँ नहीं मिल रही मेरी अम्मा।
कई चेहरों में ढूँढ़ रहा हूँ नहीं मिल रही वैसी मेरी अम्मा।।

सूरज चन्दा से मैं पूछूँ, कहाँ छिप गई मेरी अम्मा।
तुम तो हो दिन रात के प्रहरी तुम ही ढूँढ़ो मेरी अम्मा।।
आसमान से विनय कर रहा मेरी अम्मा मुझको लौटा दो।
धरती माँ से लिपट रहा मैं, अम्मा का आँचल फिर मुझे उढ़ा दो।।

जाओ जाओ अम्मा तुम लेकिन हम अब भी हैं अबोध बच्चे।
दुनिया की रस्में जटिल बहुत, इस राह के हम राही कच्चे।।
कैसे भार उठा पायेंगे यदि सर पर हाथ नहीं हो तेरा।
रात बहुत काली है अम्मा, कैसे होगा स्वर्ण सवेरा।।

आ जाओ बस आ जाओ

आवाज दे रहा हूँ माँ कब से
आ जाओ बस आ जाओ
भूखा हूँ माँ कुछ मुझे खिलाओ
व्याकुल हूँ माँ मुझको सहलाओ।।

आँखें कब की सूज चुकी हैं?
पलकें अब नमी नमी सी हैं
नाक हमारी लाल हो गई
होंठ थक गये, कम्पित स्वर
गला भरा है स्वर विहीन
श्वास हमारी थकी बुझी सी हैं।

आ जाओ अब आ जाओ
सर पर ममता का हाथ फिराओ
हाथ फिराओ चूमो चाटो
जैसे बछरे को उसकी गइया
कहाँ खो गई मेरी मइया
ढूँढ़ो भइया ढूँढ़ो भइया।।

ज्ञान ग्रन्थ सब भूल गया माँ
लाचार बना बस तुम्हें निहारे
सभी सहारे डूब चुके माँ
तुम बिन नइया अब कौन उबारे।।

आ जाओ बस आ जाओ तुम
नहीं अधिक अब तरसाओ तुम
मैं पागल आवारा हूँ माँ
मेरा जीवन अब तुम्हीं सँवारो
मैं गरीब निर्धन हूँ माँ
वैभव लक्ष्मी बन प्यार लुटाओ।।

टेर लगाते हार गया माँ
बाट जोहते हार गया माँ
जिद्दी बन मैं चीख रहा माँ
भूखा प्यासा सो जाऊँगा माँ।।

फिर बहुत मनाओगी तुम मुझको
मचल गया तो नहीं मनूँगा
बहलाओगी तुम फुसलाओगी
तब तो माँ मैं और ठनूँगा।।

हाय!
मैं जाग उठा हूँ दिवा स्वप्न था
तुम माँ मुझसे अब दूर हो गई
नहीं मनाओगी तुम अब मुझको
चाहे मैं मचलूँ सिर पटकूँ या रोऊँ
भूखा प्यासा ही मैं सोऊँ
तुम तो मुझसे अब दूर हो गई
आसमान की नूर हो गई।।

लेकिन हम तो बच्चे हैं तेरे
सर पर हाथ फिराना होगा
पीठ तुम्हें सहलाना होगा
प्रेम - सुधा बरसाना होगा
माँ सर पर हाथ फिराना होगा
माँ सर पर हाथ फिराना होगा।।

माँ तुम कहाँ?

माँ तुम अपना हृदय खोल
मुझको सीने से चिपका लो।
मैं फिर नंग धड़ंग शिशु बन जाऊँ माँ
तुम अपने आँचल से चिपका लो।।

माँ तेरे नरम हाथ फिर
मेरी कमर पीठ सहलायें।
मेरे मन तन मस्तक का अहोभाग्य
तू गोदी में ले स्तनपान कराये।।

कितना असीम सुख माँ बतलाऊँ कैसे
नन्हीं आँखों से निरख रहा।
मैं सीने से चिपका नन्हा बबुआ
पर तेरी आँखों में त्रैलोक्य अनोखा देख रहा।।

तू गंगा सुरसरि बन निशदिन
ममता का स्नान कराती है।
वह गंगा भी क्या पावन होगी
जो तेरी आँखों में बरबस आ जाती है।।

हे प्रभु मेरे जन्म जन्मान्तर के चक्कर को
माँ की गोदी में यूँ ही पार करा देना।
नंग धड़ंग मैं खेलूँ कूदूँ
थक जाऊँ तो माँ की गोदी में सुला देना।।

नजर किसी की लग जाए ना
इधर-उधर तू ताक रही।
फिर धोती के पल्लू से
मेरा मुँह फिर स्तन अपना ढाँप रही।।

मैं कृष्णचंद्र बन भीतर ही भीतर
हँसता और मुसकाता हूँ।
मैं निशंक सो रहा माँ की गोदी में,
पर कानों में मिसरी सी लोरी क़ौन सुनाता है?

तुमसे तुम्हारी शिकायत कृपानिधान

जिसने मुझको जनम दिया है उसकी पीड़ा कैसे देखूँ।
पीड़ा से मेरा आहत मन बोलो तुमको अब कैसे निरखूँ।।

मेरी तो आँखें नम हैं, मैं क्या जानूँ भवसागर बंधन।
तुम तो हो केवट भवसागर के, मुख मोड़ रहे क्यों रघुनंदन।।

मोह जाल के इस बन्धन में क्यों इतना भरमाते हो।
तुम पर अर्पण जीवन जिसका, उससे ही अब कतराते हो।।

मूक बनी मेरी पीड़ा, पीड़ित माँ की सुन करुण पुकार।
तुम भी तो सुनते होगे,
हे अंतर्यामी! हम सबके मन की यह चीत्कार।।

अब इसकी पीड़ा तो तुम ही हर सकते हो दया निधान।
कई जनमों के बंधन सब, मैं नहीं जानता तेरा विधि विधान।।

रहम करो रहबर मेरे हम दीनों की सुन आहत वाणी।
मुक्त करो बन्धन माया के, है निरीह व्याकुल प्राणी।।

माता ही मेरा पूजन है, उसने ही प्रभु तेरी राह दिखाई।
अंधकार था जीवन मेरा, अन्तर्मन में उसने तेरी ज्योति जलाई।।

अब उसकी पीड़ा को देखूँ मैं या प्रभु देखूँ तेरी निठुराई।
दीन-हीन हम लाचार बहुत, तेरे सम्मुख है झोली फैलाई।।

मन पागल है, तन व्याकुल अब है तेरी रहमत की आशा।
मैं भिक्षुक बन द्वार खड़ा हूँ तेरे प्रभु देखो कब से भूखा प्यासा।।

पत्थर बन गई आँखें मेरी, आने में क्यूँ देर लगाते हो।
भव सागर की लहरों में क्यूँ नाहक ही तैराते हो।।

मैं विछोह का दारुण दुःख अब किसी तरह से सह लूँगा।
पर माँ की दारुण पीड़ा को हरने, अब देर तुम्हें ना करने दूँगा।।

रहम करम के दाता हो तुम मत देर लगाओ मुरली वाले।
दौड़ पड़ो अब दामन थामो नैया पार लगाने वाले।।

मृत्यु शैया पर बीमार माँ के कष्टों से आहत कवि पुत्र की ईश्वर से करुण पुकार।

मैंने महाकाल को बाँध लिया है

अरे कौन कह रहा ज्योति प्रभा अब ज्योतिहीन हो गई।
मेरे अन्तर्मन में वह तो अमर ज्योति निष्णात हो गई।।

वह देखो वह ज्योति प्रभा प्रचंड सूर्य सी चमक रही।
पूनम के चाँद सरीखी नभमंडल में देखो चाँदनी छिटक रही।।

तुम कहते हो चली गई, नहीं कभी अब वह आयेगी।
पर मैं कहता हूँ वह पास मेरे, अहसासों से दूर कहाँ जायेगी।।

अरे कौन कह रहा ज्योति प्रभा अब ज्योतिहीन निष्प्राण हो गयी।
मेरे अंतर्मन में वह तो अमर-ज्योति निष्णात हो गयी।।

वह देखो हृदयांगन में बैठी नित रामायण मुझे सुनाती है।
इस दुनिया में भटक न जाऊँ मेरे इर्द गिर्द ही मँडराती है।।

मैंने महाकाल को बाँध लिया है, वह मेरी माँ तक पहुँच न पायेगा।
शिवशंकर को थाम लिया है मैंने वह भी अब खाली जायेगा।।

माँ तुमने ही यह मान दिलाया

माँ की ममता माँ के प्रसाद ने कितना ऊँचा मान दिया है।
धन्य धन्य नरेन्द्र मोदी जी माँ का क्या सम्मान किया है।।

दौड़ पड़े नंगे पावों ही माँ से मिलने जब जब वैभव है पाया।
आँखों में आँसू भर बोले माँ तुमने ही तो यह मान दिलाया।।

अब्राहम लिंकन का मातृप्रेम

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अत्यंत धर्मपरायण तथा ईश्वर भक्त थे। एक बार किसी पादरी ने उनकी सात्विकता, दयालुता और ईश्वर निष्ठा देखकर कहा था- "हमारे राष्ट्रपति तो संत हैं"। राष्ट्रपति जैसे सर्वाच्च पद पर आसीन होते हुए भी लिंकन असहाय व रोगियों की अपने हाथों से सेवा करने के लिए तत्पर हो जाते थे। एक बार वह राष्ट्रपति भवन में मिलने आए कुछ लोगों की समस्याओं की जानकारी ले रहे थे। एक महिला जैसे ही उनके समक्ष पहुँची कि उसे देखते ही लिंकन की आँखों में अश्रु ढुलके पड़े। उसने यह देखा तो बोली, 'मिस्टर प्रेसीडेन्ट, आप अमेरिका के सबसे बड़े और सुखी व्यक्ति हैं। आपके चेहरे पर अचानक आई उदासी व आँखों से ढुलके आँसुओं का कारण? राष्ट्रपति लिंकन ने सहज होते हुए कहा, "मैं किशोर था, तभी माँ के साए से वंचित हो गया था। वह मुझे गोद में बिठाकर कहा करती थी कि हमेशा दुर्गुणों और दुर्व्यसनों से दूर रहना। दूसरों की सेवा-सहायता करना कभी न भूलना। ईश्वर उसी पर कृपा करते हैं, जो दयालु और अच्छे इंसान होते हैं। मेरी माँ ने मुझे अच्छे संस्कार दिये। मैं जो कुछ हूँ, उन्हीं की कृपा से हूँ। अब मैं जब भी किसी महिला को देखता हूँ मुझे अपनी माँ की याद आ जाती है। यदि आज मेरे साथ माँ होती तो मैं सबसे सुखी व्यक्ति होता।" कहते कहते लिंकन फिर रो पड़े।

नीतू की कलम से

जीवन में सब कुछ,
लेकिन कुछ नहीं
क्योंकि तुम नहीं माँ।
सबके लिए किया
बिना किए किसी से
पर मैंने प्यार ना पाया
क्योंकि तुम नहीं माँ।
तुम थी तो सब कुछ था
तुमने कभी आँसुओं को
अकेले में बहाने न दिया
अब तो ये आँसू
चादर के अन्दर
मुँह ढँककर
बहते हैं
सिसकते हैं
कौन रोके इन्हें
क्योंकि तुम नहीं माँ।
कहाँ चली गई
तुम हमें छोड़कर तुमने न सोचा
किसकी गोदी में
सर रखकर सोयेंगे
किससे अपने दुख-दर्द रोयेंगे

किससे अपने मन की टीस, मन के राज बाँटेंगे।
वैसे तो तुमने ही
सिखाया है माँ
दु:ख दर्द
अपने पास ही
रखना और
हँसी ठिठौली की सौगात
बाँटना
कल्पना से काँप जाती हूँ
कितना दर्द सहा है
कितने शिकवे-शिकायतों
को चुपचाप पिया है
शंकर बन चुपचाप हलाहल पिया है।
तुमने माँ-
बस सब करती हूँ माँ
तुम्हारी सीख पर चलती हूँ माँ
अब चारा ही क्या?
तुम्हारा सहारा भी नहीं
क्योंकि तुम नहीं माँ।

-कवि की मातृ स्वरूपा बड़ी बहन स्मृतिशेष विजय लक्ष्मी त्रिपाठी की बेटी रचना पांडेय की कलम से। मातृ-स्नेह की छाँव से मेरी तरह रचना बेटी भी वंचित।

तुम बड़भागी हम हतभागी

बड़भागी हो तुम जिनपर माँ की ममता है बरस रही
हतभागी हम! गुमसुम अखियाँ माँ के दर्शन को तरस रही
कैसे भाग्य सराहूँ तेरा, माँ की गोदी में बैठा है
माँ के दुलार के कारण ही कुछ ऐंठा-ऐंठा बैठा है
माँ के आँचल में चिपट सिमट, अमृत का तू पान कर रहा
माँ धन्य धन्य तू महा धन्य माँ के हाथों जलपान कर रहा
नटखट आँखों से तू देख रहा माँ की ममता का अविरल सागर
माँ विह्वल सी निरख रही तू तो उसका मुरलीधर नट नागर
कभी फिराती हाथ पीठ पर, सिर माथे पर हाथ फिराती
नयनों के अग्निबाण से अला-बलायें सब दूर भगाती
कहती है मेरे छौने पर तुम हरगिज ना हाथ लगाना
मेरा जीवन ले लो राहु-केतु तुम, पर इसके पास न आना
फिर रोती है और बिलखती मंदिर मस्जिद के द्वारे
हाथ-जोड़ बस माँग रही तेरे जीवन में चंदा सूरज तारे
पाँवों में छाले पड़े हुए हैं पर नंगे पाँवों चलती जाती
स्वयं निर्जला व्रत रहकर तुमको अमृतपान करा जाती।।

तब याद तुम्हें क्या आती होगी?

रात रात भर गीले कपड़े चादर कथरी माँ तुम बदला करती थी
मैं खाता पीता, रोता जगता या सोता तुम बस करवट लेती रहती थी
अरे कठिन तपस्या, व्रत पूजा अर्चन सब कुछ तो कर डाला
जीवन के सारे पुण्यों को माँ मुझपर हाय लुटा डाला
मेरे दोष छिपाने में माँ तुम दुनिया में अनमोल रही
मेरे गुणगानों की झोली हँस हँसकर तू खोल रही
छठी पसनी मुण्डन छेदन में खुश हो तुम पागल हो जाती
नजर कहीं लग जाए ना हर टंट घंट तुम अपनाती
पावन चरणों की कृपा दृष्टि बड़भागी तुमपर बरस रही
हतभागी हूँ मैं आँखें तेरे पावन चरणों को अब तरस रही
बड़भागी तू जो इन शतदल चरणों को नित निरख रहा
हम हतभागी माँ का वरद हस्त पर माँ के दरसन को बिलख रहा
बड़भागी तू माँ कह कह कर माँ से है नित लिपट रहा
बड़भागी तू माँ की ममता के आँचल में चिपट रहा
इधर उधर मैं भटक रहा मानो मेले में बिछड़ा माँ से बच्चा
माँ, माँ की ममता, माँ की पीड़ा, मिल ना सकेगा प्यार ये सच्चा
विनय हमारी तुम माँ के सम्मुख यूँ ही नन्हें बालक सम रहना
माँ ने जैसे तुमको पाला, वैसे ही तुम इनके पालक बनना
बड़ा कठिन है व्रत यह प्यारे, यह केवल माँ ही कर सकती है
जीवन दाता है, पर खुद नित जीती पल पल मरती है

नमन!

आँखों के गंगाजल से आओ इसके पाँव पखारूँ
हृदयांगन के फूलों को चुनकर आओ इसको माला पहनाऊँ
इतना ताप सहा जीवन में शीतल चंदन का लेप लगाऊँ
सर्दी-बारिश में ठिठुरी है आओ इसके पाँव तनिक सहलाऊँ
तेरी विराट छवि देख देख माँ मैं इतना मोहित हो जाऊँ
तेरी आँचल की छाया में, लोरी सुन मैं गोदी में सो जाऊँ
अब मैं थक गया बहुत माँ तुम लोरी वही सुनाना
नहीं चाहिए सोन परी, माँ तुम मेरे सपनों में आ जाना।।

काश! माँ आज तुम होती

काश! माँ आज तुम होती
जीवन के नजारे कुछ और होते
हम रोते तो तुम हमें चुप कराती
पराजय में हमारा हौसला बढ़ाती
कुछ अच्छा करते तो पीठ थपथपाती
काश! माँ आज तुम होती।

नहीं उठाना पड़ता माँ
दस दस बच्चों का भार
अभाव ग्रस्त जीवन-यापन
सुबह शाम चौका-बासन झाड़ू और बुहार
रसोई के खाली अधखाली डिब्बे
देखते देखते कितना सूख गई थी तुम माँ!
अब नहीं पहनना पड़ता पैबन्द लगी धोतियाँ
नहीं सोचना पड़ता कैसे परसू बिना घी की रोटियाँ।

मुझे सब कुछ याद है
तुम्हारी खामोशी बेबसी और
यहाँ तक कि जबरन रोके रहती अपनी रुलाई
नकली मुस्कराहट के बीच
मन मारकर शौक़ को नहीं,
रोज की जरूरतों को

देती रही तुम तिलांजलि
हसरतों की बेदर्द कुरबानियाँ
मुझे सब कुछ याद है
पर लिख नहीं पा रहा माँ
कलम रो पड़ी है, काँपने सी लगी है
थर थर
माँ तुम्हारी तरह
अक्सर।

काश! माँ आज तुम होती
धर्म-कर्म की राह पर हमें आगे बढ़ाती
अपनी बगिया के रंग बिरंगे फूलों
की मुस्काने निहारती
सजी संवरी वधुओं का मृदुल हास,
चूड़ियों की खनखनाहट,
पायलों की झनकार
कला की फनकार
नाचने-गाने में प्रवीन
पाक-कला की हैं मानो मशीन या संजय कपूर
बच्चों की तोतली जुबान
अम्मा दादी अम्मा नानी
का शंखनाद या गुरुवाणी अजान
होली की मानो रंग बिरंगी पिचकारियाँ
बच्चों की हँसी किलकारियाँ
और उनकी नटखट मुस्कान
कलम हमारी हँस पड़ी है
सहसा रोते रोते
काश! माँ आज तुम होती।

होली जैसा हर दिन मिलन
रंग और गुझियों की महक
रोज देखती माँ दिवाली की झलक
अठारवीं मंजिल पर हमारे गगन चुम्बी मकान
मकान मकान और दुकान
बहुत कुछ मीठा
और कुछ खट्टा भी है माँ
शायद यही जीवन है माँ।

काश! माँ आज तुम होती
हम तुम्हारे साथ बैठते
तुम्हारे नाती-पोतों की कारों में
पीछे बैठते हँसते, इठलाते
जब बहुयें हमें
कार से सैर करातीं
विवियाना मॉल घुमाती
तुम उनकी पीठ थपथपाती
और तुम अपने पोपले मुँह से
रामायण की चौपाइयाँ गुनगुनाती
"मंत्र महामनि विषय व्याल के
मेटत कठिन कुअंक भाल के"
हम तुम्हें गंगा स्नान कराते
काश! माँ आज तुम होती।

हम देखते तुम्हारे पाँव के उन छालों को
जो पाषाण हो गए थे कब के
रोज पैदल जाती थी जब बरसों
गंगा नहाने फिर गंगाधर को गंगाजलि से अर्ध्य चढ़ाने।

काश! माँ आज तुम होती
तुम हमें मूलधन ब्याज की तरह चूमती चाटती
और हमारी गलतियों को
क्षमा कर देती-स्वयं सहज भाव से
जो जीवन भर करती रही हो।
काश! माँ आज तुम होती
तो शायद कह पाता
माँ तुमने भूखे रहकर
जो हम सबको पाला है,
वही तो माँ
वही तो माँ तुम्हारी त्याग तपस्या
जप तप का आज
उजाला है।
हमारी थाली का
बना निवाला है।

काश! माँ आज तुम होती
इस उजाले में तुम्हें देख पाता।

माँ फिर दिवाली आई है

माँ फिर दिवाली आई है
मुझे तेरी याद सताई है
माँ फिर दिवाली आई है।

चमक दमक है हँसी खुशी है
पकवानों का भी दमखम है।
बिजली की झिलमिल लड़ियाँ हैं
आतिशबाजी का परचम है।।

रिश्ते भी हैं अब नाते भी हैं
हमदर्दों की फौज खड़ी है।
जहाँ जहाँ नजरें जाती हैं
हँसी खुशी और मौज बड़ी है।।

माँ फिर दिवाली आई है
मुझे तेरी याद सताई है।
नहीं चमक़ है नहीं दमक है
रिश्तों में अब नहीं क़सक है।।

कागज के अब नाते सब कुछ
रस्मों-कसमों में नहीं ललक है।।
माँ मैं तुमको याद कर रहा
दिवाली की बात कर रहा।

माँ फिर दिवाली आई है

माँ फिर दिवाली आई है
मुझे तेरी याद सताई है
माँ फिर दिवाली आई है।

चमक दमक है हँसी खुशी है
पकवानों का भी दमखम है।
बिजली की झिलमिल लड़ियाँ हैं
आतिशबाजी का परचम है।।

रिश्ते भी हैं अब नाते भी हैं
हमदर्दों की फौज खड़ी है।
जहाँ जहाँ नजरें जाती हैं
हँसी खुशी और मौज बड़ी है।।

माँ फिर दिवाली आई है
मुझे तेरी याद सताई है।
नहीं चमक है नहीं दमक है
रिश्तों में अब नहीं कसक है।।

कागज के अब नाते सब कुछ
रस्मों-कसमों में नहीं ललक है।।
माँ मैं तुमको याद कर रहा
दिवाली की बात कर रहा।

फिर दिवाली आई है माँ
मुझे तेरी याद सताई है माँ।।

पहले एक कमाने वाले
दस बच्चे सब खाने वाले।
तब भी दिवाली आती थी
शायद तुम्हें रुलाती थी।।

ऐसी ही इक दिवाली पर
जब धनतेरस आया था।
चिन्ताकुल सी घूम रही तुम
कारण कुछ समझ न पाया था।।

कम्पित हाथों से तुमने फिर
छोटी गुल्लक को फोड़ा था।
चुरा छिपाकर नजर बचाकर
कुछ सिक्के तुमने जोड़ा था।।

फिर उन पैसों को जोड़ गाँठकर
अहा क्या मोहन-भोग बनाया था।
खील खिलौने गट्टों से थाली भर
हमने दीवाली जम के मनाया था।।

फिर छुरछुरिया हाथों में देकर
तुम हँसी और खिलखिलाई थी।
पर लक्ष्मी पूजन करते करते
आँख तुम्हारी भर आयी थी।।

बेबस सा अब पूछ रहा माँ
दीवाली में तुम रोई थी।
हम सबकी दीवाली करके
सच बतलाना तुम क्यूँ रोई थी।।

माँ मैं तुमको याद कर रहा
दीवाली की बात कर रहा।
माँ फिर दीवाली आई है।
मुझे तेरी याद सताई है।।

(अमर दृश्य)

सब कुछ था सीमित पर माँ थी तेरी कृपा अलौकिक
त्याग तपस्या का सम्बल था, पास नहीं कुछ साधन भौतिक।
पालन पोषण कर माँ तुमने हमको इतना बड़ा कर दिया
स्वयं निर्जला व्रत रहकर हमको पैरों पर तुमने खड़ा कर दिया।।

जगमग दीवाली में माँ चमक रही हो जैसी तारा
आसमान से निरख रही हो सुख समृद्धि का एक नजारा।
लेकिन माँ यह सच है हर श्वासों में बस तेरा तप ही बोल रहा
तेरी प्रखर तपस्या ही माँ मेरी भाग्य ग्रंथि को खोल रहा।।

माँ मैं तुमको याद कर रहा,
दीवाली की बात कर रहा।
माँ फिर दीवाली आई है,
मुझे बेहद याद सताई है।।

दिव्य मूर्ति तेरे दर्शन से

मैं भक्तिहीन मैं कर्महीन,
सामर्थ्यहीन मैं दीन हीन माँ मैं अति मलीन।
तुम स्वर्ण प्रभा सी कुन्दन मैं प्रभाहीन,
अवरुद्ध कंठ हूँ स्वर विहीन।।

तुम प्रेम मूर्ति वात्सल्यमयी ममता का लहराती हो सागर।
मैं रिक्त हृदय-पाषाण सरीखा तुम कोमलता-सुचिता की हो गागर।।

मैं भावहीन मैं बुद्धिहीन पूजन की विधि नहीं जानता।
मिलने की चाह बहुत है माँ पर सकुचाता हूँ कतराता।।

मैं चाह रहा रोऊँ इतना मेरा तन-मन सब बह जाये।
तेरे वियोग में तड़पूँ इतना नभमंडल सारा ढह जाये।।

इतने पर भी शान्ति नहीं माँ सोच रहा क्या कर डालूँ।
परम शान्ति को खोज रहा माँ तेरे चरणों को बस पा लूँ।।

दिव्यमूर्ति माँ तेरे दरसन से सर्व हीनता हर जायेगी।
भटक रही जो भव सागर में नाव हमारी तर जायेगी।।

हम कितने बौने हैं

माँ तेरी विशालता के समक्ष हम कितने बौने हैं।
तुम लहराती सागर हो माँ हम अंजुलिभर दौने हैं।।

मैं भाव हीन सामर्थ्यहीन प्रेम-सिन्धु कैसे संभाल मैं पाऊँगा।
तुम दिव्य मनोहर वात्सल्य मूर्ति मन मन्दिर में तुम्हें बैठाऊँगा।।

मैं आँसू की जय माला हर पल तुमको पहनाता।
माँ जपता हूँ नाम निरन्तर रोता हूँ अथवा गाता।।

विवेकानन्द ने कहा था

भारत में सब स्त्री-प्रकारों में माँ सबसे ऊँची है, पत्नी से भी ऊँची। पत्नी और संतान मनुष्य को त्याग सकते हैं, पर उसकी माँ कभी नहीं त्यागती। माँ सदा वैसी ही रहती है, अथवा अपने बच्चे को कदाचित तनिक अधिक प्यार करती है। माँ वह उज्ज्वल प्रेम दर्शाती है, जिसमें सौदा नहीं होता, वह प्रेम कभी नहीं मरता। ऐसा प्रेम किससे हो सकता है? केवल माँ में, पुत्र में नहीं, पुत्री में नहीं, पत्नी में नहीं।

उस कष्ट को देखो, जो माँ शिशु के पालने में उठाती है। क्या उसे इसमें आनन्द आता है? निश्चय ही। वह उपवास करती है, प्रार्थना करती है, नजर रखती है। वह इसे सबसे अधिक प्रेम करती है। क्यों? इसलिए कि इसमें कोई स्वार्थ नहीं है।

माँ विश्व की निष्पक्ष शक्ति है, जो अपने निस्वार्थ प्रेम के कारण कुछ माँगती नहीं, कुछ चाहती नहीं, अपनी संतान के दुर्गुणों की चिंता नहीं करती, वरन् उसे और अधिक प्यार करती है।

केवल माँ के प्रति चिरंतन, सम्पूर्ण आत्म-समर्पण ही हमें शान्ति प्रदान कर सकता है। भय और लाभ की भावनाओं को अलग रखकर, माँ से माँ के निमित्त ही प्रेम करो। माँ से प्रेम करो, क्योंकि तुम माँ की संतान हो। केवल माँ के आश्रय में ही हम सुरक्षित हैं। देवी के प्रति प्राचीन वैदिक स्तुति में एक दूसरा भाव था। "मैं प्रकाश हूँ" मैं वायु हूँ, जो सब प्राणियों में जीवन फूँकती है। यही वह अंकुर है जो बाद में मातृ-पूजा के रूप में हिन्दुओं में प्रचलित पूजा बनी!

''माँ'' की वाणी फूटी थी

शब्द शब्द में ब्रह्मांड समाया, मंत्रों की अपनी ताकत है।
शास्त्र पुराणों ने पहले बतलाया अब वैज्ञानिक शोध-हिमायत है।।

शब्दों के सागर में आओ हम इस महाशब्द को पहिचानें।
एक शब्द है यह महाशब्द उसकी ताकत को अजमायें।।

''माँ'' शब्द घोष वह शब्द अनोखा उच्चारित करती असंख्य तरंगें।
अंर्तमन को शान्ति मिले भाव खिले नित रंग बिरंगे।।

इस शब्द प्राण का उच्चारण जीवन में क्रांति जगा देता।
जो इसकी महिमा को भूल गया जीवन भ्रांतिमय कर देता।।

जब शब्दों का उच्चारण करते, चेहरे का औरा घटता-बढ़ता।
पर ''माँ'' के सुमिरन करने भर से मुखमंडल तेजवान बन मुस्काता।।

आदि कवि महर्षि वाल्मिकी जी की जब समाधि टूटी थी।
आदि - काव्य रचने वाले के, श्री मुख से माँ की वाणी फूटी थी।।

आदि कवि ने महाकाव्य में, ''माँ'' उच्चारित कर पहला श्लोक कहा था।
माँ के उच्चारण से मानो अखिल विश्व को जगा दिया था।।

माँ मैं कैसे तेरा शृंगार करूँ

माँ बोलो मैं कैसे तेरा शृंगार करूँ?
चुन चुन कर फूलों को लाया
पर तुम कोमल फूलों से ज्यादा
सोच रहा चंदन से अभिसार करूँ
पर तुम सुवासित चंदन से ज्यादा
मन में आया अर्ध्य चढ़ाऊँ
माँ माँ कहकर
अंजुलि भर भर कर।
स्तुति के शब्द नहीं पास
वाणी भी अवरुद्ध, मैं हताश!
पद कमलों की ओर देखता
इनके आगे नतमस्तक हो जाऊँ
दृगजल से सिंचित कर
तेरे चरणों को जी भर नहलाऊँ
अंर्तमन से तुमको जी भर गीत सुनाऊँ
माँ बोलो मैं कैसे तेरा शृंगार करूँ?
फूलों से या मलयागिरी के चंदन से
मैं कैसे तेरा अभिसार करूँ
फूलों से भी तुम ज्यादा कोमल हो
चंदन से ज्यादा शीतल
गंगा जमुना से भी निर्मल
माँ फिर कैसे अभिसार करूँ
माँ मैं कैसे तेरा शृंगार करूँ।

तुम रामायण पढ़ती जाती थी

अहसास नहीं हो पाया मुझको माँ कब-कब तू बीमार हुई।
तन मन धन की पीड़ा सहते सहते माँ कब कब तू लाचार हुई।।
देखा नहीं दवाई लेते, डाक्टर से तुम हरदम कतराती।
पर मेरी सर्दी खाँसी में माँ तुम रात रात पलक न थी झपकाती।।
घर के नुस्खे से लेकर तुम नीम हकीम डाक्टर एक कर देती।
जब तक मैं ठीक न होता तुम हरगिज चैन न लेती।।
मेरी थोड़ी पीड़ा भी पर्वत लगती पर अपने दुःख को समझा राई।
कमी न होने पाए मेरे पालन में माँ तुमने जोड़ी पाई पाई।।
अरे! मैं मन भावन पीताम्बर पहने इठलाता सा घूम रहा।
गिनी चुनी रह गई साड़ियाँ माँ का मन नहीं डोल रहा।।
था अभाव-तंगी या और बहुत कुछ सब कुछ तुम सहती जाती थी।
कहीं अधीर न हो जायें हम सब तुम रामायण पढ़ती जाती थी।।
रिश्तों की तुम सेतु बनी सबको यूँ जोड़े रहती।
कहीं न हम विचलित हो जाए आँधी पानी को मोड़े रहती।।
गर्मी हो या सर्दी-पावस हृदय तुम्हारा वातानुकूलित।
क्या रजाई गर्मी देगी जब माँ तुम मेरे पास प्रफुल्लित।।
सम्बन्धों में पड़ती दरार तुम झट बन जाती ईंटा गारा।
जब भी रिश्ते उधड़े माँ तुम तुरपन कर देती न्यारा।।
अपने जीवन की सब खुशियाँ हँसते हँसते बच्चों को दे डाला।
कहाँ छुपाती हो तुम अम्मा झुर्रियों का यह ओढ़ दुशाला।।
कमर तुम्हारी झुकी हुई है हाय कितना बोझ सम्भाला है।
निष्ठुर जग की ठोकर खाकर माँ तुमने हमको कदम कदम पर पाला है।।

माँ तेरे कम्पित स्वर, जर्जर हाथों पाँवों की यह हलचल।
अमृत सुधा पिलाने को, स्वयं पिया काल कूट हलाहल।।
कभी देखता कौशल्या माता को, कभी यशोदा माँ की ममता।
देवकी माँ की तड़प देखता माँ तेरी रिश्तों से क्या समता।।
माँ की तपस्या का प्रतिदान स्वयं विधाता के वश के बाहर।
माँ संजीवनी अमृत सी ममता का तू है निर्मल सागर।।
सभी तीर्थ तेरे चरणों में, तेरा चरणामृत है गंगा सागर।
इन्हें छोड़कर मैं क्यों भटकूँ रमते इसमें मेरे नटनागर।।

माँ के चरणों को अविरल धोने दो

मैं अधीर मन विकल हो रहा मत मुझको तुम रोको।
रोने दो माँ के चरणों को दृग जल से धोने दो।।

इन चरणों की कृपा कि जिनके बलबूते मैं खड़ा हुआ।
इन चरणों की पदधूली से मेरा जीवन है बड़ा हुआ।।

इन चरणों के वंदन को मैं नित स्वर साधना सजा रहा हूँ।
शान्त शान्त भूमण्डल हो जा, मैं अपनी माँ को बुला रहा हूँ।।

माँ आयेगी मेरी पुकार सुन मेरा विश्वास यह बोल रहा।
स्वर लहरी के इन तारों को धीरे-धीरे वह खोल रहा।।

माँ के स्वागत को देखो स्वयं स्वर माधुरी थिरक रही।
एकटक पलकें राह देखती हृदय तंत्रिका मचल रही।।

वह देखो वह कौन आ गया मुझ पर अपना वात्सल्य लुटाने।
प्रेम-सुधा का भूखा मैं, माँ आ गई अमृतपान कराने।।

मातृहीन बालक से पूछो माँ का आँचल क्या होता है?
माँ की गोदी में दुबका बालक क्या जाने ईश्वर-अल्लाह क्या होता है।।

मंदिर मस्जिद गिरजाघर गुरुद्वारा सब माँ के आँचल में समा गए हैं।
काबा-काशी वाला खुद अपने हाथों माँ की गोदी में मुझे थमा गए हैं।।

तुम कहते हो उसको पूजूँ जिसे आज तक जान न पाया।
तुम कहते हो ढूढूँ उसको जो है कण कण में स्वयं समाया।।

इसीलिए मैं हाथ जोड़ता माँ की छाया में रहने दो।
प्रभु की माया प्रभु ही जाने, मुझे माँ की माया में पलने दो।।

हृदय हमारा भर आया है इसे स्वतः यूँ ही बहने दो।
आँखों की गंगा-जमुना को माँ का अभिनंदन करने दो।।

ये विकल इन्हें यूँ ही बहने दो।

इक थी माई

वह मेरी माँ थी
और मुहल्ले भर की थी माई
मानवता, करुणा, वात्सल्य की सजीव मूर्ति वह
आदि सृष्टि, पर नहीं थी वह हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई

हम सब कुछ भी हो
अलग अलग धर्म
राजनीति दलदल के चितेरे
किन्तु सकल विश्व में
धर्म राजनीति पूजापाती से ऊपर
माँ होती है।

कहानी अब आगे बढ़ाता हूँ
गरीबी की जीवन चर्या
कमरतोड़ मंहगाई
पिता श्रमिक सीधे सादे
सीख न पाए दुनिया से चतुराई
ऐसी ही सरल थी मेरी वह माई
सपना था उसका
बेटे को कैसे बड़ा बनाऊँ?
और लिखा पढ़ा कर इसको
कैसे ऊँचा स्थान दिलाऊँ?

मैं बेखबर रहा बरसों तक
मुझे खिला पिलाकर माँ
स्कूल छोड़ने जाती थी
फिर कितने घर चौका-बासन निपटाकर
हँसती मुस्काती फिर मुझको लेने आ जाती थी।

धीरे-धीरे मैं बड़ा हो गया
दसवीं बारहवीं अव्वल दरजे से पास हो गया
सोचा अब कुछ काम करूँ
हाथ बटाऊँ पापा मम्मी का
पर मेरी अम्मा अड़ी हुई थी
रट एक यही, दिन-रात वही
तुमको आगे पढ़ना है पढ़ना है पढ़ना है
जग में तुम चन्दा सूरज सा चमको
यह मेरा सपना है
मुन्ना मेरा तू ही अब मेरा गहना है
अम्मा की जिद फिर जीत गई
इंजीनियरिंग में मेरा नाम आ गया
तीस हजार फीस का पैगाम आ गया
हम मन मसोस कर बैठ गये
पर दूसरे दिन भीषण दुपहरी में
एक लिफाफा अम्मा ने मुझे थमाया
कहीं देर हो जाए ना
मुझको कालेज फीस भरने को दौड़ाया
मैंने सोचा माँ जहाँ-जहाँ काम करती है
कितने घर से माँगी होंगी यह बड़ी राशि
वह स्वाभिमानिनी मेरी माँ
कैसे यह सब सह पाई होगी?

यह सोच सोचकर मैं शरमाता था
माँ पर कभी-कभी झल्लाता चिल्लाता था
और मुहल्ले में अपना सिर
नीचा कर ही आता जाता था।
ऐसे ही चार वर्ष यूँ ही बीत गये
पर क्या मजाल
फीस जमा करने में देरी हो
हर नए सत्र के पहले ही
अम्मा एक लिफाफा तीस हजारी पकड़ाती थी
नम आँखें नीची कर फिर मुस्काती थी।

कभी-कभी मैं देखा करता था बचपन से
चार चूड़ियाँ सोने की
नानी ने अम्मा को दी होंगी
मुफ़लिसी में कितनी बार पिताजी कहते
लाओ इनको मैं बेचूँ
और बोझ बनी इस जीवन नैया को
ऐसे वैसे मैं खीचूँ
शान्त सदा रहती थी अम्मा
सारी पीड़ा अभाव नित पीकर
पर इसपर अम्मा खुब चिल्लाती
अपने मुन्ना की दुलहिन को मैं दूँगी
यह सुहाग की सोने की मेरी चूड़ियाँ
मर जाऊँगी पर इसे नही बेचूँगी।।

मैं इंजीनियरिंग में टॉप कर गया
प्लेसमेन्ट में लाखों का फिर जॉब मिल गया
सोचा पहले ही वेतन से

अम्मा का कर्ज उतारूँगा
माँ पाई पाई की मोहताज रही जीवन भर
इसके अगणित कष्टों के बदले
इसकी खाली झोली में पैसे ही पैसे भर दूँगा।
आज मुझे वेतन मिलना था
माँ सुबह सुबह पूजन में बैठी थी
मैं आफिस धीरे से चला गया
और जवां ख्वाबों के संग शाम को वेतन लेकर लौटा
देखा अम्मा पूजन में ही शान्त झुकी बैठी है
जैसे सजदे से अब तक उठी नहीं
मैं हर्षोल्लास से बोला अम्मा देखो
देखो तेरा गहना आया है
अब हँसो और चूमो चाटो
माँ साकार हो गया तेरा वह सपना आया है
फिर मैं चीखा चिल्लाया कल्पा रोया
पर अम्मा सजदे से उठी नहीं
खूब हिलाया और डुलाया
चिर समाधि से फिर वह जगी नहीं
अम्मा मेरी निष्प्राण हो गई
मैं रहा झकझोरता, माई मेरी शान्त हो गई।

फिर इक दिन पापा ने मेरा हाथ पकड़
उस सूने बक्से को खोला
पैबन्द लगे कुछ साड़ी फटे ब्लाउज
कुछ रेजगारी, वह चूड़ी का उजड़ा डिब्बा
काँप रहे थे हाथ हमारे
पापा की नम थी आँखें यह देख देखकर
फिर पापा ने वह डिब्बा खोला

पर हाय नहीं थीं वे चार चूड़ियाँ
पर चार पर्चियाँ मुड़ी तुड़ी सी
डिब्बे में बन्द पड़ी थी
मैंने आहिस्ता से इक इक पर्ची को खोला
मैं चिल्लाया और हृदय जोर जोर से रोया
वे चार पर्चियाँ
चार बरस की
मेरी फीस की रसीदें सब बयाँ कर रही थी
और उसमें कुछ पर्ची
जौहरी की माप तौल मायूस कीमतें
हर चूड़ी की लिखी हुई थी
बदले में मैं नहीं दे सका
उसको पाई।
हाय हमारी माई।।

आज बहुत बड़ा आदमी हूँ भाई
पर उरिन नहीं हो सकता माँ के ऋण से
उसका सपना पूरा, पर मैं रहा अधूरा
कौन चुका पाया है ऋण माँ का
लिखते लिखते कवि की भी आँखे भर आईं
ऐसी थी ऐसी ही हैं सब दुनिया की माई!

घर की देहरी हम आबाद करेंगे

मन विक्षिप्त है दिशाहीन बस अपनी आहें सुनता हूँ।
क्षमाशील माँ सुख दे न सका इसका दारुण दुःख सहता हूँ।।

तुम आदि सन्त वट वृक्ष बनी मेरे इस नंदन वन की।
कहाँ खो गई माँ तुम चंदन थी इस चंदन वन की।।

मल्यागिरी में कहीं छुप गई, हम उसको तनिक सँभाल न पाये।
तुम बिखेरती रही ज्योति ज्ञान की हम मन को तनिक खंगाल न पाये।।

सेवा व्रत का धर्म निभाया हम ऋणी तुम्हारे आजीवन।
यह क्षण भंगुर जीवन क्या, चिर ऋणी हमारा शत् शत् जीवन।।

अपराधी हूँ रहा भागता जब थी तुम निपट अकेले।
रोजी रोटी के चक्कर में माँ क्या क्या पापड़ हैं बेले।।

सब बेटों के घर तुम बरबस चलकर आती जाती।
मन की दूरी मिट जाए खुद सुन्दर सेतु बनाती।।

काश! समझ पाता तब उस मृदुल हँसी की पीड़ा।
अंध-बधिर के समक्ष बज रही हो मानो सरस्वती की वीणा।।

प्रायश्चित कर रहा माँ अनजाने में यदि पीड़ा हो पहुँचाई।
हाय नहीं देख पाया माँ कब कब तेरी आँखें भर आई।।

सपना था पुरखों की देहरी पर ज्योति जले घर-दीवार बने।
मैं रहूँ चली जाऊँ पर पुरखे इसका दीदार करें।।

सच होगा सपना माँ घर देहरी हम आबाद करेंगे।
जहाँ रही सौभाग्यवती माँ हम तेरी यादें आबाद करेंगे।।

मेरे सम्मुख तुम कभी न आना

हाथ जोड़कर विनय कर रहा मेरे सम्मुख तुम कभी न आना।
मन वचन कर्म से यदि सीखा तुमने अपनी माँ का जिगर दुखाना।।

कर्कश वाणी ऊँचे स्वर में यदि तुम माँ से बातें करते हो।
उसकी भाव-भंगिमा की जरा समझ नहीं रखते हो।।
सच भूल गए क्या तुम माँ ने ही तुमको पहला शब्द सिखाया।
तोतली जुबान से सिखा सिखा तुमको इतना विद्वान बनाया।।

रे विद्वानी मूढ़ महा तुम मुझे रोष न दिलाओ।
कायर तू अति दीन-मन मलीन मत अपना पौरुष दिखलाओ।।

माँ की कुछ जरूरतों का अब हिसाब तू माँग रहा।
जिसने सर्वस्व दिया तुमको अब उसके पोषण से भाग रहा।।
तेरी काया रक्त-माँस यह सब उसके शरीर की शोभा है।
माँ से विमुख कृतघ्न तू पागल है इक धोखा है।।

हाथ जोड़कर विनय कर रहा मेरे सम्मुख तुम कभी न आना।
मन वचन कर्म से यदि सीखा तुमने अपनी माँ का जिगर दुखाना।।

उसके मंदिर तीरथ जाने पर प्रतिबन्ध लगाता है तू।
नाते रिश्ते बेटी के घर जाने पर रोक लगाता है तू।।
भूल गया तू, नंगे पाँवों से तुझे उठाए मंदिर भागी जाती थी।
तेरी पसनी मूढ़न छेदन में पागल सी रिश्तों की भीड़ जुटाती थी।।

अरे नास्तिक अब तू उसकी श्रद्धा को कोरी बकवास बताता है।
छोड़ अकेला उसको तू, दुनिया के संग रास रचाता है।।

बीमार और जर्जर विधवा है पर तू है अपनी मस्ती में चूर।
दवा वैद्य का खर्च गिनाता पर माँ तुम कितनी हो मजबूर।।
फटी पुरानी धोती से उसने सारा जीवन यूँ काटा है।
तेरे खातिर मंदिर-मस्जिद, नीम-हकीम के तलवों को उसने चाटा है।।

मेरा क्रोध बढ़ रहा प्रचंड वेग से शंकर तीसरा नेत्र खोल रहे।
तू अपनी जननी का अपराधी पत्ते पत्ते सब बोल रहे।।
मैं शाप दे रहा हूँ तुझको पर तेरी माँ ही मुझको रोक रही।
मेरे क्रोध की महाअग्नि में वह खुद अपने को झोंक रही।।

माँ की दया-क्षमा सागर में क्रोध हमारा बहा जा रहा।
आँखें अपनी खोल जरा अंधा बन तू कहाँ जा रहा।।

माँ कितने पापों से तुमने उन्मुक्त किया है

श्रद्धा और भक्ति की निर्मल मंदाकिनी प्रवाहित होती।
तप्त हृदय पटल में माँ तेरी छवि शीतलता देती।।

मानस का जब मन्थन करता, कानों में बंशी बजती।
हृदय तंत्रिका सिंचित होती, अज्ञान मोह भव बाधा हरती।।

माँ श्रीरामचरित मानस मन्थन चिंतन मानस
दर्पण मुझको क्या क्या दे डाला।
अपनी अमृतमयी वाणी से मानस-अमृत मेरे कानों में डाला।।

मर्म स्पर्शी भाव भगीरथी बहाकर, श्रीराम-भरत का चरित सुनाया।
प्रभु की लीला प्रभु की वाणी, का अनुपम पियुष पिलाया।।

मानस मुक्तावलि राम कथा दिगदिगान्तर तक गूँज रही।
माँ तेरे स्वर का स्पन्दन मानों मेरे कोमल मन में कूक रही।।

तुममें कौशल्या माँ का रूप देखता,
धन्य हुआ मैं, तुमने मुझको जन्म दिया है।
गर्भगृह से ही राम कथा सुनाकर,
माँ कितने पापों से तुमने मुझको उन्मुक्त किया है।।

नव शक्ति का सिंचन रामायण का चिन्तन क्या तंत्र दिया है।
हम अकिंचन तुम चिरन्तन राम नाम का हमको महामंत्र दिया है।।

फुग्गों को मैं देख देख ललचाता हूँ

माँ आज हाट मैं फिर आया हूँ।
फुग्गों को मैं देख-देख ललचाता हूँ।।

जेब हमारी भरी हुई थी कागज के नोटों से।
पर्स हमारी उचक रही थी अभिमान के झोकों से।।
पर ढूँढ़ रहा था एक इकन्नी जो तुम गुब्बारे वाले को देती थी।
उस गुब्बारे को मेरे हाथ थमा मानो जन्नत की चाभी देती थी।।

अब नहीं मिल रही एक इकन्नी, ना तेरी उँगली का वह साथ।
बूढ़ा हो गया फुग्गेवाला, पूँछ रहा बाबू कहाँ खो गया माँ का हाथ।।
ये फुग्गेवाला भी अम्मा से कितना मोल भाव करता था।
मैं जितना मचलूँ-रोऊँ यह भाव बढ़ाया करता था।।

वह गुब्बारा क्या था मानो भूमण्डल की सौगात भरी।
जब तक मेरे हाथों में उड़ता क्या किसकी औकात नहीं।।
वह फुग्गे वाला मानो ब्रह्मांड मुझे पकड़ा देता था।
मैं बन जाता था शक्तिमान, क्या जादू वह पकड़ा जाता था।।

यह फुग्गेवाला अब जर्जर एकटक आसमान को देख रहा।
मोल-भाव अब करता न कोई मुँहमाँगी कीमत फेंक रहा।।
बड़े प्यार से, प्रेम भाव से यदि बच्चे को वह छू भर ले।
मानों बड़ा अनर्थ हो गया, गाली खाए मन मसोस के।।

याद आ गया बचपन मेरा मैं बुखार में लेटा था।
माँ नहीं ले गई हाट मुझे मैं बिस्तर में ऐंठा बैठा था।।
सहसा फुग्गेवाला घर पूछ-पूछ मेरे दरवाजे आया।
हाथों में रंग बिरंगे ढेर सरीखे गुब्बारे भर के लाया।।

बहुत देर तक बहुत प्यार से उसने मुझको दुलराया।
मेरे नन्हें पाँवों को फिर मेरा सिर सहलाया।।
सारे गुब्बारे देकर वह बोला भइया फिर आऊँगा।
जब तक तुम बिल्कुल ठीक न होगे मैं नित गुब्बारे लाऊँगा।।

वह गरीब है अम्मा ने सोचा फिर धीरे से उससे बोली।
भइया इनकी कीमत ले लो, सुन उसकी धरा तनिक सी डोली।।
बोला सच है मोल भाव कर माँ जी मैं गरीब पेट भरता हूँ।
पर सब बच्चे मेरे अपने हैं, इसी भाव में सुखी भाव मैं रहता हूँ।।

दुनिया की सारी दौलत और इबादत क्या यह मुस्कान दिलायेगी।
मेरे इन गुब्बारों के बदले मिला क्या दुनिया कीमत दे पायेगी।।
आज हाट आया हूँ मैं कहता उससे एक फुग्गा दे दो।
जितना चाहो फुग्गे की तुम मुँहमाँगी कीमत ले लो।।

वह हँसा और फिर रोया बोला बाबू अब तुम बड़े हो गये।
मैं फुग्गे बस बच्चों को देता तुम तो अब पैरों खड़े हो गये।।

माँ आज हाट मैं फिर आया हूँ।
फुग्गों को मैं देख-देख ललचाया हूँ।।

माँ मेरा अस्तित्व न होता!

माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।

जल्दी उठना जल्दी सोना चबा चबाकर भोजन खाना।
सुबह सुबह उठकर बड़ों के पैरों में अपना शीष झुकाना।।
फिर नहलाती पूजा करवाती कहती प्रभु को तुम जानो।
रामायण के दोहों को पढ़ कहती रिश्तों को पहचानो।।

माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।

ईमान की पहली पाठशाला, विनयशीलता का ओढ़ दुशाला।
मेहनतकश-कर्तव्यनिष्ठ मूलमंत्र की ज़पवाती थी हमसे तुम माला।।
पर निंदा पर दोषों के तुम हम सबको कितने अवगुण समझाती।
कभी न हड़पना अंश किसी का सरल भाव से तुम बतलाती।।

माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।
रामायण के पात्रों का माँ तुम हम सबसे अभिनय करवाती।
राम-भरत के मिलन दृश्य पर आँखें अपनी रोक न पाती।।

नट-नागर और सुदामा की तुम जब जब कथा सुनाती।
भक्ति भाव और सखा भाव के तुम अनुपम रहस्य समझाती।।

माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।

तुम भी रोई और मुझे रुलाया रामायण कहते सुनते।
पर कहती कभी न रोना यदि सारा जीवन अभाव में बीते।।
सब धर्मों की कथा सुनाती पर कहती थी ईश्वर है एक।
रंग खून का एक बताती, कहती धर्म के ठेकेदार अनेक।।

माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।

तुम समझाती अक्सर पड़ोसी धरम का मीठा नाता।
कहती यह महापाप गर दुःख पड़ोस में और तू अपने घर इठलाता।।
शाहिद के अब्बा दुनिया में नहीं रहे जो पड़ोस में रहते थे।
सुबह शाम तुमको अम्मा कहकर क्या अदब निभाया करते थे।।

हिन्दू और मुसलमान से भी ऊपर क्या इंसानी रिश्ता था।
सच कहता हूँ लगता मुझको उनसे कई जन्मों का जज्बाती रिश्ता था।।
माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।

आँखें अम्मा भर आई हैं, हाथ हमारा काँप रहा है।
सर चकराता पाँव काँपते अनहोनी कुछ भाँप रहा है।।
तेरी सीखों का उपदेशों का यह सम्बल यदि मेरे पास न होता।
दाँव पेंच की इस दुनिया में माँ सच कहता मेरा अस्तित्व न होता।।

माँ की शिक्षा को अब मेरे जीवन में ढलने दो।
छोटी-मोटी सब सीखों को मेरे जीवन में खिलने दो।।

मुझे चाहिए बस वात्सल्य मूर्ति

तुम सरल मूर्ति तुम मूर्ति महान तुम प्रेम मूर्ति तुम कृपा निधान।
माँ सजलमूर्ति तुम क्षमा मूर्ति तुम द्विव्य मूर्ति तुम दयानिधान।।

करुणामयी तुम करुण मूर्ति स्तुतिमूर्ति तुम स्तुति गान।
भक्तिमूर्ति तुम भावमूर्ति ज्ञानमूर्ति तुम नित नूतन ज्ञान।।

श्रद्धा-भक्ति की अचल मूर्ति तुम साकार ब्रह्म क्या दूँ प्रमाण।
तुम योग मूर्ति तुम हो विराग तुम शक्तिमूर्ति तुम शक्तिप्राण।।

तुम शान्ति मूर्ति तुम दिव्य मूर्ति देख रहा माँ तुममें अभिराम श्याम।
तुम धर्म मूर्ति तुम कर्ममूर्ति तुम न्यायमूर्ति पूजन निष्काम।।

निर्मल सागर सी तुम अतल मूर्ति संकल्प तुम्हारे अडिग महान।
तुम प्रेरणामूर्ति संकल्प मूर्ति सौम्य मूर्ति की अतुल खान।।

मंगलमूर्ति तुम वात्सल्यमूर्ति अनुराग-विराग का विशद ज्ञान।
फलीभूत कई जन्मों का तप माँ तुम हो उसका वरदान।।

मुझे चाहिए बस वात्सल्य मूर्ति।

सच मानो मेरा दम घुटता था

पंच तारा होटल के भोजन-प्रासाद में छप्पन व्यंजन मैं देख रहा।
देशी और विदेशी खानों की फेहरिस्त को निरख रहा।।

तरह तरह के खानों के संग मीठे-खट्टे की लाइन बड़ी।
सूप और आइसक्रीमों की इंटरनेशनल जमात लगी।।
सब कुछ खा पीकर भी मैं अक्सर भूखा-प्यासा रहता हूँ।
बरस बीत गए अम्मा के हाथों की रोटी ढूँढ़ा करता हूँ।।

वह सूखी रोटी जिसमें मिसरी और मलाई रहती थी।
वह रोटी जिसमें ममता की सोंधी खुशबू महका करती थी।।
दाल नहीं खाई बरसों से जो माँ अमिया डाल बनाती थी।
तरह तरह की तरकारी जो थाली में दुल्हन सी बन ठन आती थी।।

कैसा था वह चूल्हा चौका क्या बरतन मतवाले थे।
थाली लोटा गिलास सब माँ अन्नपूर्णा के प्याले थे।।
उस छोटी थाली में छप्पन व्यंजन की मानो सजी कतार लगी।
कहीं न खाली पेट उठूँ अम्मा की मीठी फटकार पड़ी।।

एक हाथ से पंखा झलती खुद चुल्हे की गर्मी सहती।
माथे से बह रहा पसीना पर अम्मा मुझ पर पंखा झलती।।
बहुत खा चुका अम्मा मैं ना ना करता जाता।
लेकिन अम्मा का हाथ अनोखा मेरी थाली भरता जाता।।

नहीं मिठाई बहुरंगी पर माँ जब थोड़ा गुड़ देती थी।
मेवों पिस्तों की रसमलाई फीकी बेरंगी लगती थी।।
क्या मजाल थी अम्मा के रहते बिन दूध पिए सो जाऊँ मैं।
कभी रात में नींद खुले तो अम्मा को अपना सिर सहलाता पाऊँ मैं।।

कभी न हुई अपचन जलन सीने में माँ के हाथों के खाने में।
रूह काँप उठती है मेरी अब भोजन प्रासादों में जाने में।।
सब कुछ है अति सुन्दर स्वादिष्ट बड़ा पर भूख मर गई कुछ खाने को।
मन तड़प रहा है कलप रहा सूने चौके में अब जाने को।।

अहसास हो रहा अम्मा के जर्जर घर में स्वर्ग बसा करता था।
दुनिया भर मैं घूमा भटका सच मानो मेरा दम घुटता था।।

माँ तुम ही मेरा पाप हरो

पंडित ज्योतिष त्रिकालदर्शी कुंडली दोष बहुत हैं बतलाते।
अंक शास्त्री जी टेरा वाले खूब आँखें - भौंहें मटकाते।।

विज्ञापन में होड़ लगी है टी.वी. मीडिया तो इनका बाजार बन गई।
ब्रह्माजी ने जो लिखी लकीर ये ढोंगी बदलेंगे-दुकान सज गई।।

शनि चन्द्र की मार बताते राहु केतु का भय दिखलाते।
साढ़ेसाती और पनौती वे अनिष्ट के क्या क्या माफिया नाम बताते।।

वह देखो लगन भाव में गुरू वक्र दृष्टी से देख रहा।
महादशा चल रही तुम्हारी वह जेब तुम्हारी टटोल रहा।।

पूजा मंत्रों का ले रखा ठेका तरह तरह के हवन कराता।
नहीं जानता कोरा अक्षर नाच नाचकर क्या भजन कराता।।

महाकाल हट जायेगा महा - मृत्युंजय का जाप कराओ।
सवा लाख रुपये देकर चंडाल-दोष का पाप हटाओ।।

जिनके हाथ स्वयं काले हैं वे तेरा अब हाथ देखते।
जिनकी लकीरें हैं घिसी पिटी, वे तेरा अब भाग्य देखते।।

नहीं दवाई के पैसे हैं ये ढोगी लूट रहे हैं।
तरह तरह के ढोंग कराकर, श्रद्धा को बेरहमी से कूट रहे हैं।।

यदि मेरा विश्वास करो तो मैं इनके चंगुल से तुम्हें छुड़ाऊँ।
घर बैठे ही बिना दक्षिणा, तेरी ग्रह दशा सब सही कराऊँ।।

साढ़ेसाती, सर्पदोष पनौती के सभी माफिया अपनी जान बचा भागेंगे।
महा दशाएँ और अला बलाएँ अपने प्राण न बचा पायेंगे।।

मत उलझो तुम ढोंगी बाबाओं से,
बस 'माँ मातेश्वरी नमो नमो' का जाप करो।
मन ही मन माँ से कहो कि मत भटकाओ माते,
माँ तुम ही मेरा पाप हरो।।

असंख्य महा मृत्युंजय जप का, तू घर बैठे प्रसाद पा जायेगा।
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे गिरजाघर के चौखट से भी तू ज्यादा पायेगा।।

ये पंडे, डंडे त्रिपुंडधारी काँप उठेंगे फिर तुम्हें देखकर।
पास तुम्हारे नहीं फटकेंगे माँ की महाशक्ति को लखकर।।

सुनो महामंत्र मेरा तुम माँ के तुम नित पैर छुओ।
सुबह शाम उससे बतिआओ फिर खुद हँसो और अलमस्त रहो।।

तुम पुराण-इतिहास खंगालो।
सब धर्मों का सार निकालो।।

मातु-कृपा जब, सर पर तेरे, फिर क्या अला बला है।
ग्रहों की औकात नहीं महाकाल भी चुपचाप टला है।।

तुम लालटेन सी दिखा रहीं

माँ अनंत ज्योति माँ अमर ज्योति माँ तुम हो स्वयं ज्योतिर्धाम।
माँ अखण्ड ज्योति माँ सकल ज्योति प्राण दायिनी तुम सुख ललाम।।

मैं प्रभाज्योति को देख रहा तुम ब्रह्म ज्योति में समा गई।
निरख रहा मन की आँखों से ज्ञान ज्योति तुम जला गई।।

लौ के प्रकाश में नित देख रहा तुम नित अपनी छवि दिखा रही।
कहीं न ठोकर लग जाए तुम लालटेन सी दिखा रही।।

विमल ज्योति सी चमक रही मानो ईश्वर का वह दिव्य रूप।
मैं चकाचौंध सा देख रहा माँ बस तेरा निर्मल स्वरूप।।

बिजली सी मन में कौंध रही तेरे होने का अहसास।
रे मत घबराना अंधकार में, कहती मैं हूँ तेरा प्रकाश।।

अंतर्ज्योति में निरख रहा दमक रहा माँ तेरा प्रकाश।
नयन बन्द कर लेता हूँ अंर्तमन में माँ तेरा निवास।।

मानो मेरा कोई मुझको कहीं बुलाता है

मत समझो मैं सिसक रहा, यह तो पावन चरणों का वंदन है।
आँखों से झर रहे फूल, इन फूलों से माँ तेरा अभिनंदन है।।

इस सिसकी में सुनो ध्यान से सप्तसुरों का अद्भुत संगम।
मन मयूर सा थिरक रहा, निरख निरख यह रूप विहंगम।।

माँ तो मेरी अति पावन है मन के भावों से नहलाता हूँ।
स्तुति करने की सामर्थ नहीं, रुद्धकंठ हूँ बस मौन हुआ जाता हूँ।।

हृदय पटल की पावन सरिता गंगा जमुना सी थिरक रही।
तेरे दर्शन पाने को माँ अँखियाँ मेरी सिसक रही।।

मेरा तन, मन, मेरी पूजा-अर्चन, भावों का अनुपम चंदन है।
अंर्तमन की यह सजल भेंट, तेरे चरणों का आलिंगन है।।

जब मैं सिसकी भरता माँ, थपकी दे पीठ कोई मेरी सहलाता है।
आती गहरी सी हिचकी जब मानों मेरा कोई मुझको कहीं बुलाता है।।

करहु कृपा सुत सेवक जानी

जीवन में बस एक सहज करम करता रहता हूँ।
जननी है मेरी आराध्य देवि! बस यही मरम भजता रहता हूँ।।

उस जननी की पूजा स्तुति संतप्रवर तुलसी ने की है सबसे पहले।
जिस माँ ने है जना राम को उसकी पूजा राघव से पहले।।

रामचरितमानस दिग्दर्शक माँ तुमने बचपन से सिखलाया है।
धन्य सुधन्य तुलसीदास तुमने ही मुझको माँ का दास बनाया है।।

तुलसी रामायण की हर चौपाई प्रतिपल गुनता रहता हूँ।
हो नत मस्तक इस चौपाई को मैं हृदय कमल में रखता हूँ।।

बंदऊँ कौसल्या दिसि प्राची।
कीरति जासु सकल जग माची।।
करऊँ प्रनाम करम मन बानी।
करहु कृपा सुत सेवक जानी।।

श्वासों में बस स्पन्दन है

माँ याद तुम्हारी चंदन है पाँव तुम्हारे अभिनंदन हैं।
शीतल मंदाकिनी सी माँ तुम हृदय तुम्हारा वृंदावन है।।

उसी हृदय में ही रहते हैं गोपी कृष्ण यशोदा नन्दन।
सकल राम परिवार बसा है शत् शत् वंदन कौशल्या नन्दन।।

इस वृंदावन में कृष्ण हमारे राधे राधे बुला रहे हैं।
चित्रकूट के कानन में माँ भरत राम को मना रहे हैं।।

कितने रूपों में देख रहा माँ की ममता का लहराता सागर।
वह विश्व पोषिनी-जन्मदायिनी मैं इतराता इठलाता उसका नट नागर।।

चित्रकूट-वृंदावन सी पावन तुम सीता माता सी मन-भावन।
राम कृष्ण तुम कृष्ण राम मय मैं मरुथल माँ तुम ममता की सावन।।

कभी देखता माते तुमको, माँ जगदम्बे माँ गुरुमाता।
सती, सावित्री, अनुसूइया जैसी तेरी पदधूलि पाने को जी ललचाता।।

अपनी इन आँखों से माँ मुझको तुम राम कृष्ण सा दुलराती।
रोम रोम स्पन्दित मेरा जिह्वा बस अम्मा अम्मा कह तुतलाती।।

माँ तेरी पूजा मैं नहीं जानता अपनी लघुता कैसे बतलाऊँ।
हाथों में कम्पन श्वासों में स्पन्दन कैसे तुमको माला पहनाऊँ।।

माँ कैसे प्रभु की कोमलता पाऊँगा

श्रद्धा और भक्ति भावों में, खोज रहा तुम कहाँ छिपी हो।
भक्ति के अनन्य भाव में, देख रहा तुम रची बसी हो।।

श्रद्धा तो होती है उन पर श्रेष्ठतम आदर के आगार।
भक्ति मचलती ही रहती है अपने आराध्य की छवि निहार।।

माँ भटक रहा मैं नित, दुनिया के गोरख धंधों में।
तुम हँसकर बस कह देती हो ईश्वर तो रहता नित अपने बन्दों में।।

भगवान भाव के भूखे हैं वे नहीं तौलते चाँदी सोना।
फल-मेवों का अम्बार लगा दो यह सब है माटी का खिलौना।।

प्रेम-भाव के ही वे भूखे प्रेम जगत में ही रहते हैं।
कौन पुकारता आर्त भाव से कान लगाए सुनते रहते हैं।।

श्रद्धा-भक्ति का अनुपम रिश्ता है मन, हृदय और आत्मा का।
श्रेष्ठ भाव है श्रद्धा तो भक्ति राह दिखाती परमात्मा का।।

श्रद्धा तो है जटिल अनुशासित भावों का पथ है।
पर भक्ति मचलती सरल हृदय में कहती बैठो यह प्रभु का रथ है।।

प्रेम हिलोरें ले लेकर मन में समुद्र लहराये।
ऐसे ही मन से पुकार प्रभु को, वे दौड़े दौड़े आये।।

आडम्बर के बीच रहा मैं, जीवन अब ढलने को आया।
श्रद्धा क्या है, भक्ति क्या है बचपन में ही था तुमने समझाया।।

माँ बहुत उमस है बहुत तपन है अंर्तमन में कैसे शीतलता पाऊँगा।
निष्ठुर-भावों का जंजाल भरा माँ कैसे प्रभु की कोमलता पाऊँगा।।

हे कुल देव, तुम इनके हाथ पकड़ना

नवरात्रि आने वाली है
याद आ रही मेरी अम्मा
पता नहीं है मुझको
कब से निर्जला व्रत कर रही अम्मा
पर कुछ कुछ तो मुझे याद है
चैत्र कुँवार मास में
जब नवरात्रि आती थी
गाँव के जर्जर घर में
जाकर माँ हम सबकी कुशल मनाया करती थी
नवदिन के वे व्रत कठिनतर
माँ भी जर्जर घर भी जर्जर
एक नहीं बरसों बरसों तक
चैत्र कुँवार के नव दुर्गों में
माँ पूजा अर्चन व्रत करती थी
स्वयं न खाती थी कुछ
फल प्रसाद भी सबको
दोनों हाथों बाँटा करती थी
रात दिन और सुबह शाम
मैं नहीं जानता रात रात भर
कुल देवता से वह क्या कहती थी?
शायद उनसे यह कहती होगी,
मेरी अचल निष्ठा के बदले

कुलदेव श्री बूढ़े बाबू।
मेरे बच्चों पर कृपा दृष्टि
तुम इतनी करते रहना
फूले फले सदा जीवन में
बूढ़े बाबू तुम इनके हाथ पकड़ना
तुम इनके हाथ पकड़ना
तुम इनके हाथ पकड़ना।

जब जब भी मुझको जन्म मिले

तुम मुझको बबुआ कहती थी।
कितना सुन्दर पर नटखट बबुआ था तेरा।।
कितने भूखे हैं कान हमारे।
फिर माँ बोलो एक बार यह बबुआ मेरा।।

चाह रहा मैं फिर बबुआ बन।
तेरी अमर कोख में आ जाऊँ।।
उछल कूद कर थक जाऊँ जब।
अम्मा तेरी गोदी में मैं सो जाऊँ।।

जब भी जनम मिले फिर मुझको।
तुम ही माँ बनकर आ जाना।।
जो तेरी गोदी में साम्राज्य मिला।
नहीं मिलेगा ढूँढूँ चाहे लाख जमाना।।

अनमोल रिश्ते

तुम चली तो मैं चला
दिल मिला तो सब मिला
दिल ही न मिला
तो प्रिय क्या मिला
तुम चली तो मैं चला

द्वार तुम्हारे इक दिन मैं फकीर सा आया
उस फकीर को तुम अमीर ने ऐसा प्रेम दिखाया
भूल गया वह सब कुछ क्या पूजा क्या पाती
मैं भिक्षुक सा खड़ा रहा तुम जग जननी सा प्रेम लुटाती
नहीं पुत्र सा जाया तुमने ना सइयाँ ना भइया
प्यार लुटाया, स्नेह पिलाया जैसे हो मेरी मइया
नहीं पास कुछ देने को, नतमस्तक सर है मेरा
दास सरीखा तुम मुझको मानो, यही भाग्य हो मेरा
तेरी प्रेम सुधा में नित खेलूँ और नहाऊँ
एक नहीं शत शत जन्मों में यूँ ही तुमको पाऊँ
तुमको पाऊँ तुमको ध्यायूँ तुम स्नेह सुधा बरसाओ
माँ की छाया से वंचित मैं, मुझको भर-पेट खिलाओ।।

-मातृस्वरूपा भाभीश्री कमलिनी और भाभीश्री स्नेहलता को समर्पित मेरी स्नेह-याचना!

अलविदा माँ!

अश्रुपूर्ण नयनों से हम नमन तुम्हारा करते हैं।
कर जोड़े सजल नयन बेबस विदा तुम्हें हम करते हैं।।

यह सच है माँ इस शरीर से नहीं हमारे पास रहोगी।
लेकिन मन के इस बंधन से बोलो कैसे हमसे दूर रहोगी।।

माँ के सम्मुख या प्रभु के आगे ही मैं रोता चिल्लाता।
बाकी भीड़ भरी दुनिया है कोई मुझको समझ न पाता।।

मन में जो मेरे उथल पुथल है माँ जाने या वे जाने।
जन कोलाहल है आस-पास पर सब है कितने अनजाने।।

जग में केवल माँ ऐसी निस्वार्थ प्रेम वह करती है।
पुनीत प्रेम की वह सागर उसकी काया में ममता की गंगा बहती है।।

जिसकी काया से जन्मा मैं उसका तन मन मेरा तन मन है।
नहीं चाहिए नव निधि मुझको माँ मेरा अनमोल रतन है।।

माँ ने ही तो मेरे जीवन को संस्कारों से पाला पोसा।
धन वैभव को तुच्छ बताया नैतिकता का दिया भरोसा।।

रिश्तों की कीमत, भाई चारा वे मानस की चौपाई।
सरल रहो तुम सहज बनो पर कभी न सिखलाई चतुराई।।

अच्छे और कुटिल लोगों से कैसे है रिश्ता रखना।
चाहे जैसी हो कठिन परीक्षा अटल सत्य को पकड़े रहना।।

मेरे प्रभु ने कितना सोच समझकर माँ तेरी गोदी में मुझको डाला।
प्रभु का ही अंश समझ माँ तुमने निर्मल मन से मुझको पाला।।

कैसी डोर बँधी है माँ मैं केवल तेरे सम्मुख रोता चिल्लाता।
नहीं देखता जब आस-पास माँ मैं बिलख-बिलख कर रोता।।

मेरे नयनों की भाषा मेरा चंचल मन माँ ही केवल समझ रही।
अपना मरम न देती कुछ भी पर मेरा सब कुछ परख रही।।

पास रहूँ या दूर बहुत मेरी साँसों को वह सुनती रहती।
सात समुन्दर की दूरी है पर चौखट अपलक देखा करती।।

अलविदा कह दिया है तुमने, मेरा मन भर-भर आता है।
अब यह कैसा रिश्ता मेरे प्रभु मैं भूखा आँचल उसका अकुलाता है।।

यह कैसा रिश्ता मेरे प्रभु।
मैं भूखा आँचल उसका अकुलाता है...

श्रद्धा सुमन

बिछुड़े हुए तुमको माँ हमसे बीत गया एक दशक।
सता रही है ये आज भी मन में बिछुड़ने की कशक।।

ज्यों ज्यों समय बीतता जाता तुम अधिक हमें आती हो याद।
इक इक पल की यादें मन में किससे कहाँ करे फरियाद।।

याद में तेरी अम्मा बरबस आँसू है झरते रहते।
पावन तेरी पुण्यतिथि माँ हम श्रद्धा सुमन समर्पित करते।।

मेरा परिचय

उत्तर प्रदेश क्या भारत में कौन कहो जो नहीं जानता उन्नाव जिला
पूर्व जन्म के संचित पुण्यों से "शुक्ला खेड़ा" में मुझको जन्म मिला।
ददुआ गणेश की यह देहरी, वृंदावन, शिवदुलारे शालिग्राम की माया
भरद्वाज गोत्र उत्पन्न शारदा चरण मातु सरला के प्रेम सिंधु ने जाया।।

शुक्ला खेड़ा में खड़े शिवाले करते हर आगतुंक की अगवानी।
बिना बताये ही कहते ये वंश त्रिवेदी के पद गौरव की एक कहानी।।
कुआँ और तालाब की शोभा माँ सरस्वती की वीणा जहाँ बजा करती है।
गाँव जवारि का बच्चा-बच्चा शारदा भईया का नाम लिया करती है।।

बंधु चार बालेन्दु अनुज है शशी - चन्द्र अग्रज थे मेरे।
पूज्य पिता के महाप्रयाण पर सच यही पिता पालक थे मेरे।।
जीवन की अच्छी शिक्षा दे संस्कारों में पाला पोसा।
बीत गया उनका जीवन अभाव में भाग्यविधाता को नहीं कोसा।।

पंच देवि बहनें हैं मेरी - सब अपने अपने घर की रानी।
शशि चन्द्र के साथ साथ विजयलक्ष्मी कनक बन गई अब अमर कहानी।।
राम भरत सम भ्राता, मुझको "जीवनयापन" तक पहुँचाया।
उनकी ही कठिन तपस्या से मैं विद्युत विभाग फिर यूनियन बैंक में हूँ आया।।

मैं जो कुछ भी हूँ आपके सम्मुख यह सब उनके चरणों की माया।
मेरे शरीर के हर रोम रोम में केवल बस उनकी शीतल छाया।।
रामायन के राम भरत को दुनिया जैसे घर घर में है पूज रही।
मेरे अग्रज अनुज बन्धु की मीठी वाणी मेरे हृदयांगन में गूँज रही।।

मातुश्री सरला देवी ने अनंत चौदस शनिवार सन् चौवन को अपनी काया से जन्म दिया।
पितृ दुलार से वंचित यह बालक पर अग्रज शशी चन्द्र ने पिता से बढ़कर प्यार किया।।
अब नयनों में नयनांजलि है बस उनसे मिलने को मन आकुल है।
जीवन की अब इस संध्या में मेरा मन प्रभु से मिलने को व्याकुल है।।

कैसे भूल जाऊँ कि ग्रीष्म की तपन, बरसात की बेमुरव्वत बारिश और शीत की कपकपाती ठंड में कितना सही है, भीगी है और रात-रात ठिठुरी है मेरी माँ अपने जीवन के मधुमासी बसन्त को तिलांजलि देते हुए ताकि ऊष्ण हवाओं में मैं झुलस न जाऊँ, कहीं भीग न जाऊँ, कहीं शीत लहर न लग जाये। बदले में यह अकिंचन कुछ दे न सका आज तक और जन्म जन्मांतर न दे सकेगा कुछ।

—विधुजी

विधु भूषण 'विधुजी'

प्रकाशक :

सेतु प्रकाशन

9, माधव पार्क विभाग - **2,** माधव इन्टरनेशनल स्कूल के पास,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद - **382418**
(M) 94276 22862

ISBN : 978-93-87149-63-2